॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 123 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अगस्त– 2018 30/–प्रति

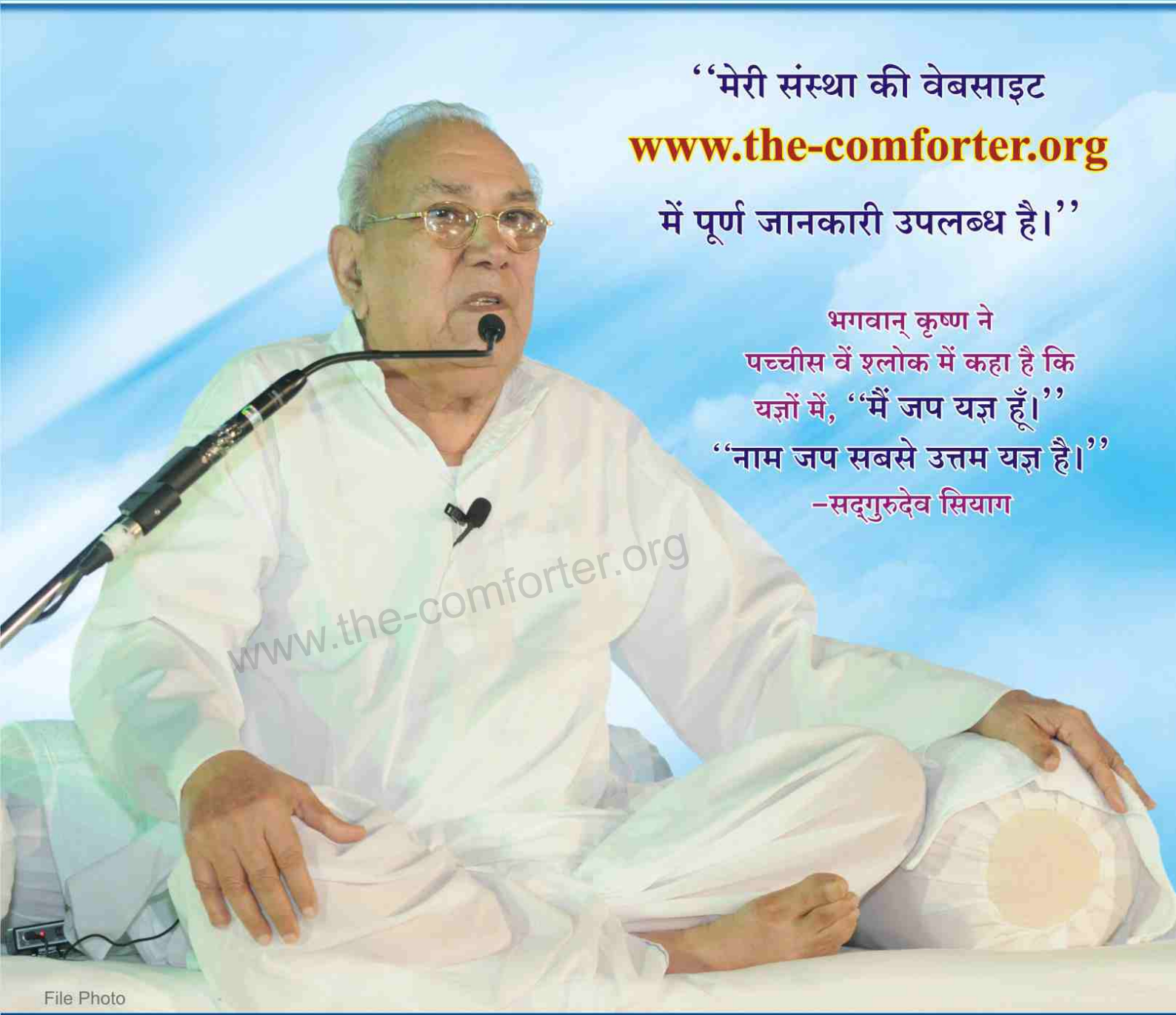

"मेरी संस्था की वेबसाइट
www.the-comforter.org
में पूर्ण जानकारी उपलब्ध है।"

भगवान् कृष्ण ने
पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि
यज्ञों में, "मैं जप यज्ञ हूँ।"
"नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है।"
–सद्गुरुदेव सियाग

www.the-comforter.org

File Photo

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

जोधपुर आश्रम-गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर गुरुदेव की पूजा-अर्चना करते हुए साधक। (27 जुलाई 2018)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

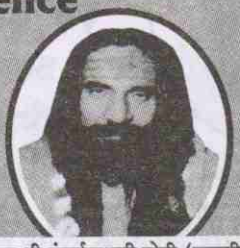

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 123 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अगस्त – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्गुरुदेव

श्री रामलालजी सियाग

(ब्रह्मलीन)

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,

होटल लेरिया के पास,

चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :

spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra

Near Hotel Leriya,

Chopasani, JODHPUR (Raj.)

INDIA - 342 003

☎ +91 0291-2753699

Mob. : +91 9784742595

e-mail :

avsk@the-comforter.org

Website :

www.the-comforter.org

अनुक्रम

मेरी संस्था की वेबसाइट....4

परम अभीप्सा (सम्पादकीय)....5

कलियुग में सर्वोत्तम यज्ञ नाम जप....6

मंत्र का रहस्य....7–8

Religious Revolution in the World....9

हृदय मंथन....10

योगियों की आत्मकथा....11

सद्गुरुदेव के दिव्य शब्द....12

योग के आधार....13

मेरे गुरुदेव....14

योग के बारे में....15

समर्थ सद्गुरुदेव श्री सियाग की तस्वीर से ध्यान....16

कुसंग परमार्थ का बाधक (कहानी)....17

आप सुधरे, जगत् सुधरा....18

चित्र पृष्ठ....19–22

अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....23–24

मनुष्य और विकास....25

अनुभाव–प्रधान युग का आगमन....26

सद्गुरुदेव का प्रवचन....27

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....28

श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव का महाप्रस्थान....29–31

योग का परम लक्ष्य मोक्ष है–रोग नहीं....32

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....33–34

सिद्धयोग....35

संस्था के उद्देश्य....36

सम्पादकीय शेष पृष्ठ....37

ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

"मेरी संस्था की वेबसाइट www.the-comforter.org में पूर्ण जानकारी उपलब्ध है।"

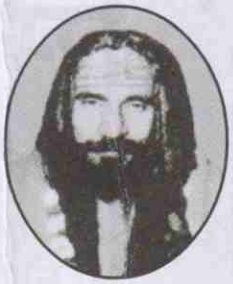

इस वेबसाइट से मेरी तस्वीर लेकर संपूर्ण-विश्व के एड्स रोगी, उसका (सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर का) ध्यान अपने आज्ञाचक्र पर करें तो क्या होगा? ईश्वर ही जाने !

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः (VII)

भौतिक विज्ञान के "जैव-विज्ञानियों" को इस पर शोध करना चाहिए, क्योंकि, यह सम्पूर्ण मानव-जाति के उद्धार का पथ है।

मेरी संस्था के वेब साइट www.the-comforter.org में पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। इस वेब साइट से मेरी तस्वीर लेकर संपूर्ण-विश्व के "एड्स" रोगी, उसका ध्यान अपने आज्ञाचक्र पर करें तो क्या होगा? ईश्वर ही जाने।

भारतीय योग दर्शन में वर्णित इस "शिव योग" से विश्व शान्ति के रास्ते की सभी रुकावटों का समाधान संभव है।

मैं, महामहीम के सामने इसे एक "जनहित-याचिका" के रूप में पेश कर रहा हूँ। आशा है, श्रीमान् इस पवित्र-यज्ञ में आहुति देकर, मुझे अनुग्रहित करेंगे।

भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरों सिंह जी शेखावत ने संस्था को इस पवित्र कार्य के लिए, शुभकामना संदेश भेजा है, जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है।

शुभ कामनाओं सहित। विनीत

दिनांक 25-8-2003

(रामलाल सियाग)
संस्थापक एवं संरक्षक
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र,
जोधपुर-(राजस्थान)

प्रतिलिपि:—

परम अभीप्सा

समर्पण ही कर्मयोग का साधन तथा साध्य है- अपनी समस्त चेष्टाओं का परम तथा विश्वव्यापी इच्छाशक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण।

आत्मा की इस विकसनशील अभिव्यक्ति के प्रकाश में,-उस आत्मा की जो पहले प्रत्यक्षतः अज्ञान में बद्ध होती है और पीछे अनन्त की शक्ति तथा प्रज्ञा में स्वतंत्र होती है,-हम कर्मयोगी के प्रति गीता के इस महान् एवं सर्वोच्च उपदेश को अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं कि, "सब धर्मों अर्थात् आचार-व्यवहार के सब सिद्धान्तों, विधानों एवं नियमों को त्यागकर केवल मेरी ही शरण ले।" सभी मानदण्ड और नियम कुछ ऐसी अस्थायी रचनाएँ होते हैं, जो जड़-प्रकृति से आत्मा की ओर संक्रमण करते हुए अहं की आवश्यकताओं पर आधारित होती हैं।

निःसन्देह ये सामयिक उपाय सापेक्ष रूप में अनिवार्य होते हैं जब तक कि हम संक्रमण की अवस्थाओं से तृप्त, शरीर और प्राण के जीवन से सन्तुष्ट एवं मन के व्यापार में आसक्त रहते हैं, अथवा मानसिक स्तर के उन प्रदेशों में ही आबद्ध रहते हैं जो आध्यात्मिक दीप्तियों के द्वारा थोड़े-बहुत प्रभावित हैं। परन्तु इनके परे एक असीम अतिमानसिक चेतना की निर्बाध विशालता है, जहाँ सभी अस्थायी रचनाओं का अंत हो जाता हैं। यदि हममें ऐसा विश्वास एवं साहस नहीं है कि हम अपने आपको सर्वलोक महेश्वर तथा सर्वभूत-सुहृत् के हाथों में सौंप दें और अपनी मानसिक सीमाओं एवं मर्यादाओं का पूरी तरह से त्याग कर दें तो सनातन तथा अनन्त के आध्यात्मिक सत्य में पूर्ण रूप से प्रवेश करना हमारे लिये सम्भव नहीं हो सकता। एक-न-एक समय हमें निःशेष भाव से, संकोच, भय या संशय के बिना, मुक्त, अनन्त तथा परिपूर्ण ब्रह्म के महासागर में डुबकी लगानी ही होगी। विधान से परे हैं मुक्तता; वैयक्तिक मापदण्डों और सार्वजनिक एवं सार्वभौम मापदंडों के परे कोई अधिक महान् वस्तु है, एक निर्वैयक्तिक नमनीयता, दिव्य स्वतंत्रता, लोकोत्तर बल एवं स्वर्गीय संवेग है। आरोहण के संकीर्ण पथ के पश्चात् ही शिखर पर विस्तृत अधित्यकाएँ आती हैं।

आरोहण के तीन क्रम हैं, - सबसे नीचे शारीरिक जीवन है जो आवश्यकता तथा कामना के दबाव के वशीभूत है, मध्य में मानसिक, उच्चतर भावमय तथा आन्तरात्मिक नियम है जो महत्तर हितों, अभीप्साओं, अनुभवों एवं विचारों को टोहता है और शिखर पर पहले तो गम्भीरतर आन्तरात्मिक तथा आध्यात्मिक भूमिका है और फिर अतिमानसिक नित्य चेतना है जिसमें हमारी सब अभीप्साएँ एवं जिज्ञासाएँ अपना अन्तरीय अर्थ जान लेती हैं। शारीरिक जीवन में सर्वप्रथम कामना एवं आवश्यकता और तदनन्तर व्यक्ति तथा समाज के क्रियात्मक हित ही प्रभुत्वशाली विचार तथा प्रधान प्रेरकबल होते हैं। मानसिक जीवन में विचारों तथा आदर्शों का प्रभुत्व होता है - उन विचारों का जो सत्य का वेश धारण किये हुए अर्द्ध-प्रकाश होते हैं तथा उन आदर्शों का जो वर्तमान पर अपूर्ण अन्तर्ज्ञान एवं अनुभव के परिणाम के रूप में मन के द्वारा विरचित होते हैं, जब कभी मानसिक जीवन प्रबल होता है तथा शारीरिक जीवन अपना पाशविक आग्रह कम कर देता है, तब मनुष्य-मनोमय प्राणी अपने-आपको मानसिक प्रकृति के उस आवेग से प्रेरित अनुभव करता है जो व्यक्ति के जीवन को विचार या आदर्श की भावना में ढाल देने का आवेग होता है, और अन्त में समाज का अधिक अनिश्चित एवं अधिक जटिल जीवन भी इस सूक्ष्म प्रक्रिया में से गुजरने को बाध्य होता है।

आध्यात्मिक जीवन में अथवा उस अवस्था में जब मन से अधिक ऊँची शक्ति प्रकट हो चुकती है तथा प्रकृति को अपने अधिकार में कर लेती है, ये सीमित प्रेरक-बल पीछे हटने लगते हैं और क्षीण तथा लुप्त होते जाते हैं। तब, एकमात्र, आध्यात्मिक या अतिमानसिक आत्मा, भागवत पुरुष या परात्पर तथा विश्वगत सत्तत्त्व ही हमारा ईश्वर होता है और वही हमारी प्रकृति के नियम या 'स्व-धर्म' की उच्चतम्, विशालतम् एवं सर्वांगीणतम् सम्भव अभिव्यक्ति के अनुसार हमारे चरम विकास को स्वच्छन्दतापूर्वक गढ़ता हैं। अंत में हमारी प्रकृति पूर्ण सत्य

शेष पृष्ठ 37 पर....

कलियुग में सर्वोत्तम यज्ञ

''नाम जप''

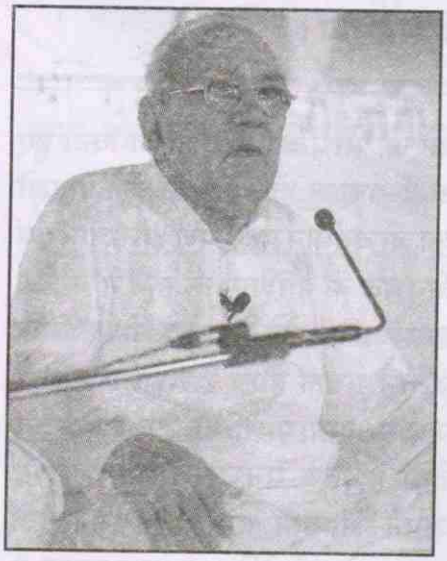

''कलियुग केवल नाम आधारा।
सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।।''

-गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज

(कलियुग में केवल, सद्गुरु द्वारा दिया हुआ हरि नाम (संजीवनी मंत्र) का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है।)

''अब कलियुग में देखिए ! हर युग में हमारे दार्शनिक ग्रन्थों के अनुसार आराधना का तरीका तय होता है। सत्युग का अलग था, त्रेता का अलग था, द्वापर का अलग था। मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, हमारे धर्म में आराधना तय की गई है। अब कलियुग में, उस तरीके से (आराधना) करना संभव नहीं है। इसलिए, **इस युग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है।** ईश्वर के नाम का जप। गीता में भगवान् कृष्ण ने नाम जप को सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।

दसवें अध्याय में अपने स्वरूपों का वर्णन किया है। भगवान् ने पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि **''यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है।''** महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है जिससे कोई हिंसा नहीं होती है। महाभारत काल में हिंसा बहुत हुई, इसलिए वह लोग हिंसा से बहुत डरते थे।

नाम जप से कोई हिंसा नही होती। कर्म काण्डी यज्ञ करोगे, आग में घी लकड़ी वगैरह जलाओगे तो कमोबेश थोड़े बहुत जीव जलेंगे, मगर नाम जप में कोई हिंसा नहीं होती। मनु ने, मनु स्मृति में कहा है कि **'जप यज्ञ' द्वारा, कर्म काण्डी यज्ञों से हजार गुणा ज्यादा फायदा होता है।** मैं तो आपको एक नाम बताऊँगा, वह आपको जपना है। वैसे मैं, क्योंकि एक कृष्ण उपासक हूँ, इसलिए राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ। भगवान् कृष्ण पूर्णावतार थे और उस कृष्ण के नाम का ही चमत्कार है कि यह सब परिवर्तन हो रहा है। मेरा कोई पंथ नहीं, नया मत नहीं, वही वैदिक दर्शन को मूर्त रूप दिया जा रहा है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

मंत्र का रहस्य

'मंत्र विद्या' हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत पर ही हमारे ऋषियों ने मन्त्रों की रचना की है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का हमारे दर्शन का सिद्धात पूर्णरूप से सत्य है। यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। ''मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ।''

बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र ''सिद्ध'' हो ही नहीं सकता। मेरे माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, मात्र ''मंत्र शक्ति'' का प्रभाव है। शब्द ब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के ही सिद्धान्त को, मैं पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहा हूँ। लोग कहते हैं, विज्ञान के इस युग में मंत्र की बात केवल अन्धविश्वासी लोग ही मानते हैं।

मैं चुनौती के साथ कहता हूँ कि मैं तो विज्ञान के शोधकर्त्ताओं से मिलने ही संसार में निकला हूँ। क्योंकि इस समय संसार में पूर्णरूप से तामसिक वृत्तियों का साम्राज्य है, इसलिए इन वृत्तियों के साधक ही संसार में नजर आ रहें हैं। ऐसे नाटक दिखाकर लोगों को आकर्षित करते हैं, आज की भाषा में उन्हें जादूगर कहते हैं। ये लोग मात्र प्रेतपूजक होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने इस संबंध में गीता में कहा है-

यान्ति देवव्रता देवान्
न्यान्ति पितृव्रता।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति
मद्यजिनो पि माम्।।9:25

''देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। पितरों को पूजने वाले पितरों का प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं। और मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं, जब शब्द से सर्वभूतों की उत्पत्ति मानते हो, फिर शब्द से ही देव और दानव सभी की उत्पत्ति हुई है। आज संसार में उन्हीं शब्दों (मंत्रों) के ज्ञाता सर्वाधिक है जिनसे भूतों (प्रेतों) की उत्पत्ति हुई है। यही कारण है कि ''परा-मनोविज्ञान'' पर शोध करने वाले पश्चिम के शोधकर्त्ताओं को ऊर्ध्व गति से अधोगति की तरफ ढकेलने वाली शक्तियों का बिलकुल ही ज्ञान नहीं है। जबकि इनमें रात-दिन का अन्तर है। क्योंकि आज उनके पास Baptized with the ghost के ज्ञाता ही पहुँचे है।

जब उनके पास Baptized with the holy ghost के ज्ञाता पहुँच जाएँगे, तभी वे लोग अपने कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। क्योंकि भौतिक विज्ञान, ऊर्ध्व गमन कर रहा है। अत: ऊर्ध्व गमन कराने वाली शक्तियाँ ही भौतिक विज्ञान का सही पथ प्रदर्शन कर सकती है। आज ऊर्ध्व गति वाली शक्तियों का ह्रास होने के कारण ही हम हमारे दर्शन को प्रमाणित करने की स्थिति में नहीं हैं। हमारा दर्शन मानव के विकास, गीता में वर्णित १३वें अध्याय के २२वें श्लोक एवं पातंजलि योगदर्शन के कैवल्यपाद के ३४ वें श्लोक में वर्णित स्थिति तक कर देता है। यही बात प्रमाणित करने, मैं विश्व में निकला हूँ।

हमारे ऋषियों ने गहन शोध के बाद इस सिद्धान्त को स्वीकार किया कि जो ब्रह्माण्ड में हैं, वही सब पिण्ड में है। इस प्रकार मूलाधार चक्र से आज्ञाचक्र तक का जगत् माया का और आज्ञाचक्र से लेकर सहस्रार तक का जगत् परब्रह्म का है, यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया। वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) इसे स्वीकार करते हुए अपनी भाषा में मूलाधार से आज्ञाचक्र के जगत् को अन्नमयकोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश की संज्ञा देता है। यह जगत्-सत्ता का निम्नतर भाग है, जहाँ विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है। आज्ञाचक्र से सहस्रार तक को आनंदमयकोश, चित्तमयकोश और सत्मयकोश की (सत् +चित् + आनंद - सच्चिदानंद) संज्ञा देता है। यह सत्ता का उच्चतर अर्द्ध है, जिसमें अविद्या पर विद्या का प्रभुत्व है। इस जगत् में अज्ञान पीड़ा या सीमा का नाम नहीं है।

'गुरु-शिष्य' परम्परा में मंत्र दीक्षा का विधान है। शब्द की धारा के सहारे ही सहस्रार में पहुँचना संभव है, अन्यथा नहीं। इस संबंध में कबीर ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा है-

कबीरा धारा अगम की,
सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा,
स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुंडलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में जाग्रत करके अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही मोक्ष है।

परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्त्व

(कृष्ण) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है, अन्य कोई नहीं।

गुरु महिमा का हमारे शास्त्रों में बहुत बखान हैं, उसी को ध्यान में रखकर असंख्य गुरु प्रकट हो गये। ऐसा सुन्दर व्यवसाय संसार में कोई है ही नहीं। बिना पूँजी लगाए, आमदनी होती है। ऐसे ही गुरुओं के कारण गुरुपद जैसा गौरवमय पद बदनाम हो गया। गुरु की सर्वोत्तम व्याख्या है जो -गोविन्द से मिलाय' इसीलिए ईश्वर की स्थिति और प्राप्ति के संबंध में कहा गया है-

'जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त हृदय में प्रतिक्षण पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी जो श्रीगुरुकृपाहीन को गोचर न होकर गुप्तवास कर रहा है वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानंद है।' मंत्र का रहस्य जब तक समझ में नहीं आता, तब तक साधक उससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। मंत्र का रहस्य कैसे जाना जा सकता है, इस संबंध में मालिनीविजयतंत्र में कहा गया है-

शिष्येणापि तदा ग्राह्या
यदा सन्तोषितो गुरुः।
शरीर द्रव्य विज्ञान
शुद्धि कर्म गुणादिभिः।।
बोधिता तु यदा तेन
गुरुणा दृष्ट चेतसा।
तदा सिद्धिप्रदा ज्ञेया
नान्यथा
वीरबन्दिते ।।3:49,48।।

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु; शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। हे देवी ! जब गुरु हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मुक्ति देता है, 'गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।'

शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धान्त, विश्व के सभी धर्म मानते हैं। इसी सार्वभौम सिद्धान्त के आधार पर हमारे ऋषियों ने मंत्र शास्त्र की रचना की है। सृष्टि के संबंध में ज्ञान संकलिनी तन्त्र में कहा है-

आकाशज्जायते
वायुर्वायोत्पद्यते रविः।
रवेरुत्पद्यते तोयं
तोयादुत्पधते मही।।25।।

'आकाश से हवा, हवा से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई है।' और संसार के सभी प्राणी पृथ्वी से उत्पन्न हुए। हमारे शास्त्र भी इन्ही पाँच तत्त्वों से मनुष्य शरीर की रचना मानते हैं। पाँचों तत्त्वों की सूक्ष्मावस्था को 'तन्मात्रा' भी कहते है। जैसे पृथ्वी के गन्धतन्मात्रा, जल की रसतन्मात्रा, अग्नि की रूपतन्मात्रा, वायु की स्पर्शतन्मात्रा और आकाश की शब्द तन्मात्रा। क्योंकि सृष्टि का जनक शब्द तन्मात्रा है, इसलिए जिस प्रकार अधोगमन के कारण मनुष्यों की उत्पत्ति हुई, उसी प्रकार शब्द (मंत्र) के सहारे ऊर्ध्व गमन करता हुआ मनुष्य छह चक्रों और तीन ग्रन्थियों का वेधन करता हुआ अपने जनक आकाशतत्त्व (सहस्रार) में लय हो सकता है। इसी का नाम मोक्ष है।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

राजनीति में प्रेम का स्थान है

राजनीति में प्रेम का स्थान तो है लेकिन वह अपने देश के लिये, देशवासियों के लिये, जाति की महिमा, महानता और उल्लास के लिये प्रेम है, वह अपने साथियों के लिये आत्मबलि का दिव्य आनंद है, उनके कष्टों को दूर करने का आनंद है, अपने देश और उसकी स्वाधीनता के लिये, अपना रक्त बहाने का आनंद है, अपनी जाति के पूर्वजों के साथ मरकर एक हो जाने का परमानन्द हैं।

मातृभूमि की मिटट्री के स्पर्श में प्रायः भौतिक आनंद का अनुभव, भारतीय सागरों से आनेवाली हवाओं, भारतीय पर्वतों से बहनेवाली नदियों का अनुभव, भारतीय वाणी, उसकी कविता और उसके संगीत को सुनने का अनुभव, सुपरिचित दृश्यों, शब्दों, आदतों, वेशभूषा, भारतीय जीवन का आचार-व्यवहार ये हैं उस प्रेम की भौतिक जड़ें। अपने अतीत पर गर्व, वर्तमान के लिये कष्ट और भविष्य के लिये भावावेश उसका तना और शाखएँ हैं। आत्मबलि और आत्म-विस्मृति, महान् सेवा, देश के लिये उच्च धैर्य, उसके फल हैं। और जो रस उसे जीवित रखता है, वह है देश में भगवान् के मातृत्व की उपलब्धि, माँ का दर्शन, जननी का ज्ञान और सतत् चिंतन, माँ की पूजा और सेवा।

-श्री अरविंद

www.the-comforter.org

Religious Revolution in the World

Positive effects begin to show between two to 15 days of regular meditation and chanting.

-The impact of Siddha Yoga is completely based on the practitioner's sincerity and **dedication** toward the practice. The more sincerity the practice is done with, the faster the disease is cured.

Freedom from addictions

-Practitioner does not have to make the effort to leave the substance.

-Siddha Yoga destroys the desire within the person to consume a particular substance.

-The practitioner therefore does not experience any withdrawal symptoms.

-As the person was not forced to leave the substance he / she does not relapse into the habit again.

-Guru Siyag sums up freedom-from-addiction quite simply: "You don't have to give up the things; the things will give you up."

-Similarly, with food too, Siddha Yoga destroys the desire within the person to consume certain foods that may cause obesity or illness. An obese practitioner thus begins to lose weight without having to go on a diet.

-Many organs of the body damaged by the intake of a substance are healed. For instance, the intake of cigarettes or alcohol damages the lungs and liver respectively. Siddha Yoga heals these organs within a short span of practice.

-Some addictions are so deeply assimilated in our system that it is difficult to recognize them. Addiction to power, success and control are not easily identifiable but their debilitating effect can be felt only when the person is deprived of them.

-The practice of Siddha Yoga first makes the person aware of such an addiction and then helps him / her overcome it.

Freedom from mental disorders and stress

-Siddha Yoga frees the practitioner from stress and psychological disorders such as insomnia, phobia, schizophrenia, OCD etc.

-Siddha Yoga corrects disharmony of the body and mind.

-It destroys negative energies that cause mental disorders or stress.

-Siddha Yoga heightens the practitioner's intuition and gives him / her sudden premonitions about various events in life. It also gives knowledge to deal with particular situations.

-The practitioner sees the cause before the effect and is therefore not disturbed by events.

Other Benefits

-Siddha Yoga is especially beneficial to students as it improves their concentration, grasping ability and retention power.

- Guru Siyag says that the practitioner can experience both material and spiritual progress simultaneously through Siddha Yoga

The benefits of Siddha Yoga can be experienced without changing your lifestyle.

-Once you begin surrendering to the Kundalini, it begins to guide you and brings about positive changes in your life.

❖❖❖

Count. to Next Edition

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

''हृदय मंथन''

वृक्ष, मौन साधे जगत् की चहल-पहल के साक्षी बने रहते हैं। राह चलते को सुगन्ध से मन प्रसन्न कर देते हैं। **पुष्प स्वयं भी खिले रहते हैं तथा आने वाले का चेहरा भी खिला देते हैं।** फल, फूल, पत्ते, छाया या लकड़ी जिस भी आशा से कोई आता है, उसे वही दे देते हैं। धूप लगने से चाहे सूख जाएँ, किन्तु किसी से पानी नहीं माँगेंगे। अपनी जान सदा हथेली पर रखे रहते हैं।

''अब तुम ही सोचो कि कितने साधकों के पास यह गुण है ! प्रकृति ने चारों ओर शिक्षा देने के लिए गुणों का विस्तार कर रखा है, पर कौन साधक शिक्षा ग्रहण करता है। सब राग-द्वेष तथा स्वार्थ में ही उलझे हैं। कोई किसी के लिए अपनी सुविधाएँ त्यागने के लिए तैयार नहीं। कोई किसी के मन को शान्ति देने के लिए आगे नहीं आता। इसीलिए सब के अपने मन अशान्त हैं। सबके चेहरे पर अन्तः पीड़ा झलकती है, फिर भी अपने आप को साधक मानते हैं। सच पूछा जाए तो ऐसे साधक, साधन करते हुए भी साधन से दूर हैं।''

मैं महाराजश्री की बात ध्यानपूर्वक सुन रहा था तथा साथ ही साथ हृदय मंथन भी कर रहा और मन ही मन लज्जित भी हो रहा था, क्योंकि वृक्षों के इन गुणों से मैं खाली था। महाराजश्री खोये हुए से न जाने वृक्षों से क्या बातें कर रहे थे !

आकाश में बादल गरज रहे थे तथा बिजली चमक-कड़क रही थी। ऐसे लगता था कि अभी सिर पर पड़ी। महाराजश्री के पास, मैं उस समय अकेला ही था। महाराजश्री ने कहा, ''देखा, बिजली कैसै कड़कती है ! ऐसा लगता है कि पता नहीं दबोच ले। मनुष्य काल की ओर से कैसा गाफिल बना है, पर मौत को सिर पर साथ लिए घूमता है। बिजली तो फिर भी पहले चमकती है, कड़कती है, किन्तु काल की तो आहट भी सुनाई नहीं देती। बाज की तरह झपट्टा मारता है और ले जाता है। जीव कितना विवश है, पर अभिमान बहुत है।''

मैंने कहा, ''महाराजश्री जी, मौत से पहले मनुष्य भी प्रायः बीमार हो जाता है, यह मौत के आने की आहट ही तो है !''महाराजश्री ने कहा, ''आहट तो है पर जीव उसे केवल बीमारी के रूप में ही लेता है, काल के आने की आहट के रूप में नहीं। वह अन्तिम समय तक जीवित बने रहने की आशा नहीं छोड़ता। यही तो अभिनिवेश कहा जाता है।''

मौत की भयानकता की बात सुनकर, मुझे डर सा लगने लगा। **ऐसा लगने लगा कि पता नहीं कब बिस्तर बँध जाए।** सब योजनाएँ धरी की धरी रह जाएँ। ऐसा मन करे कि महाराजश्री इस विषय पर बात नहीं करें तो अच्छा। मनुष्य में यही तो कमी है कि जगत् से हटने की बात वह सुनना, समझना तथा मानना ही नहीं चाहता। मैंने बात को घूमाने का प्रयत्न करते हुए कहा, ''महाराजश्री जी, बादल गरजने की ध्वनि अन्तर में भी सुनाई देती है तथा बिजली चमक भी दिखाई देती है, वह क्या है ? उसका काल से कोई संबंध है ?''बोले, ''उसका काल के उदाहरण से कोई संबंध नहीं है। यह अनुभव या तो संस्कारों से संबंधित है या तत्त्वों के आधार पर प्रकट होता है। तत्त्वों का आधार बहुत बाद में आता है। प्रायः साधक संस्कारों के स्तर पर ही उलझा होता है तथा वह भी अपेक्षातया स्थूल स्तर पर ही। जिस प्रकार कर्मों के संस्कार संचित होते हैं वैसे ही अभिमानयुक्त साधनाओं के भी होते हैं। वही संस्कार क्रियाओं में प्रकट हो कर ऐसे अनुभव करवाते हैं। तत्त्वों को आधार सभी समझ में नहीं आ सकता। तुम्हारा मन संस्कारयुक्त होने से इस विषय को समझ पाने में असमर्थ है। **तुम अभी इतना ही समझ लो कि जिस प्रकार तत्त्व, एक के पश्चात एक बनते चले जाते हैं, उसी प्रकार तथा उस क्रम में एक के पश्चात एक पुनः तत्त्वों में विलीन होते जाते हैं।** जो क्रिया तत्त्व बनते समय प्रकट होती है, वही क्रिया विलीन होते समय भी घटित होती है, किन्तु यह विषय केवल बौद्धिक स्तर पर समझने का ही नहीं है। उस के योग्य अवस्था को प्राप्त करने के लिए तुम्हें काफी साधन करना होगा।''

मैंने पूछा, ''क्या ध्वनि (नाद) तथा प्रकाश का भी परस्पर कुछ संबंध है ?''बोले, ''हाँ, दोनों ही रगड़ से स्थान पाते हैं। अभी तुम केवल स्थूल रगड़ को ही समझते हो, किन्तु यह रगड़ सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों की है। बादलों की रगड़ से ही गरजन (नाद) होता है तथा उसी रगड़ से बिजली (प्रकाश) उत्पन्न होती है ? किन्तु यह रगड़ तो स्थूल है तथा आकाश में ही प्रकट होती है। अन्तर आकाश भी सूक्ष्म है तथा तत्त्व भी अत्यन्त सूक्ष्म हैं। **उन्हें अनुभव करने के लिए संस्कार तथा वासना रूपी घाटियों को पार करना पड़ता हैं।''**

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

''परस्पर विरोधी बातें ! अब तो मुझे जाना ही पड़ेगा।''परन्तु उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और थोड़ा-थोड़ा करके मुझसे जानकारी लेने लगा। ये भूखे भेड़िये से कम नहीं है, मैंने कौतुक से मन ही मन सोचा; जितना अधिक मैं बताता था उतना ही अधिक मैं बताता जाता था, उतना ही अधिक समाचार जानने की उसकी भूख बढ़ती जाती थी। मन ही मन मैं जल्दी छुटकारा पाने का कोई उपाय करने की प्रार्थना, माँ काली से करने लगा।

अचानक वह मुझे छोड़कर जाने लगा। मैंने ठंडी साँस ली और उसे वाचालता का ज्वर फिर कहीं चढ़ न आये, इस भय से दुगुनी गति से चलने लगा। अपने पीछे द्रुतगति की पदचाप सुनकर मैंने अपनी गति और बढ़ा दी। मुड़कर पीछे देखने का साहस मुझसे नहीं हुआ। परन्तु एक छलाँग लगाकर वह मेरे साथ हो लिया और आनन्द से उसने मेरा कंधा पकड़ लिया।

''मैं तुम्हें गन्धबाबा के बारे में बताना तो भूल ही गया। वे उस सामने वाले मकान में रहते हैं।''कुछ ही गज की दूरी पर स्थित, एक मकान की ओर उसने इशारा किया। ''उनसे अवश्य मिलो; बड़े दिलचस्प आदमी हैं। तुम्हें कोई असाधारण अनुभव हो सकता है। अच्छा ! चलता हूँ,''और वह सचमुच चला गया।

कालीघाट मन्दिर में लगभग इन्हीं शब्दों में साधु द्वारा की गयी भविष्यवाणी मेरे मस्तिष्क में कौंध उठी। कौतुहलवश, मैं उस मकान के अन्दर गया तो मुझे एक प्रशस्त दालान में ले जाया गया। वहाँ एक मोटे नारंगी रंग के गलीचे पर काफी लोग इधर-उधर बैठे हुए थे, जैसे साधारणतः भारत में बैठते हैं। एक आदरयुक्त फुसफुसाहट मेरे कानों से टकरायी:

''वहाँ जो चीते की खाल पर बैठे हैं, वही गन्धबाबा हैं। वे किसी गन्धहीन फूल में किसी भी फूल की प्राकृतिक सुगन्ध भर सकते हैं या किसी मुरझाये फूल को फिर से ताजा कर सकते हैं या किसी मनुष्य की त्वचा से मनोरम सुगन्ध निकलवा सकते हैं।''

मैंने सीधे उस संत की ओर देखा; उनकी दृष्टि भी उसी समय मुझ पर स्थिर हुई। वे कृष्णवर्ण और स्थूलकाय थे। उनके चेहरे पर दाढ़ी थी और आँखें बड़ी-बड़ी तथा तेजस्वी थी।

''बेटा ! तुम्हें देखकर मैं प्रसन्न हुआ। बोलो तुम्हें क्या चाहिये ? कोई सुगन्ध चाहिये ?''

'' किसलिये ?''मुझे उनकी बातें बचकानी-सी लगीं।

''चमत्कारपूर्ण ढंग से सुगन्ध का आनन्द लेने के लिये।''

''सुगन्ध बनाने के लिये भगवान् का उपयोग ?''

''तो उसमें क्या है ? भगवान् वैसे भी सुगन्ध तो बनाते ही हैं।''

''जी हाँ ! परन्तु वे हर बार ताजा सुगन्ध लेने के लिये और लेने के बाद फेंक देने के लिये, फूलों की कोमल पँखुड़ियों रूपी शीशियों का निर्माण करते हैं। क्या आप फूलों का निर्माण कर सकते हैं ?''

''हाँ ! परन्तु साधारणतः मैं सुगन्ध ही निकालता हूँ।''

''तब तो इत्र के कारखाने बंद हो जायेंगे।''

''मेरी ओर से उन्हें अपना धन्धा करते रहने की अनुमति है ! मेरा अपना उद्देश्य तो केवल ईश्वर की शक्ति दिखाना है।''

''महाराज ! क्या ईश्वर की शक्ति का प्रमाण देना आवश्यक है ? क्या वे सकल विश्व में सर्वत्र अपने चमत्कार नहीं कर रहे हैं ?''

'' कर रहे हैं, परन्तु उनकी अनन्त सृजनात्मक विविधता में से कुछ तो सृजनात्मकता हमें भी प्रकट करनी चाहिये।''

''यह सिद्धि प्राप्त करने में आपको कितना समय लगा ?''

''बारह वर्ष।''

''दैवी शक्ति से केवल सुगंध बनाने के लिये ! हे महात्मन् ! मुझे तो लगता है आपने बारह वर्ष व्यर्थ गंवा दिये, उन सुगंधों के लिये जिन्हें आप किसी भी फूलवाले की दुकान से कुछ ही रुपयों में प्राप्त कर सकते हैं।''

''फूलों की सुगन्ध उनके साथ ही चली जाती है।''

''मृत्यु के साथ भी सुगन्ध चली जाती है। मैं किसी ऐसी सुगन्ध की कामना क्यों करूँ, जो केवल शरीर को सुख देती है ?''

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव के दिव्य शब्द

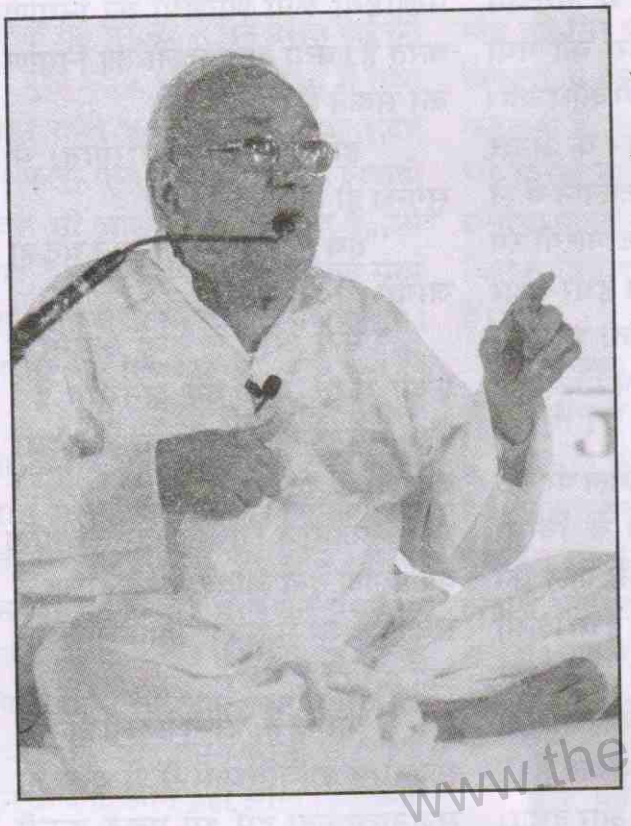

"सत्संग का मतलब सच्चाई का संग करने से है। जिस प्रकार आग के पास जाने से गर्मी महसूस हुए बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार से सत्संग का असर होता है।

सच्चा गुरु उस परम चेतन सत्ता से सीधा सम्पर्क रखता है। अतः ज्यों ही आपके हृदय के तार उनसे जुड़े कि आपमें वह सात्विक प्रकाश प्रकट होने लगेगा।"

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

"The key concept of Hinduism"

"The four Purusharthas or Goal of life."

"Dharma", "Artha", "Kama", and "Moksha" constitute the four goals of life. Dharma does not only mean religion but also morality, righteousness and duty. Artha or attainment of wealth is considered another desirable goal of life. The third goal is "Kama" or sexual pleasure. "Moksha" or release from the birth cycle is the final goal that an individual has to strive for."

हिन्दू-धर्म का सच्चा अर्थ है कि मानव-जीवन में मनुष्य उपरोक्त पुरुषार्थों का भरपूर उपयोग करें, क्योंकि भोग के बिना विरक्ति असम्भव है और विरक्ति के बिना "मोक्ष" असम्भव है।

16-1-2006
AVSK, जोधपुर

"योग के आधार"

-श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा, आत्मसमर्पण

तुम्हें केवल अभीप्सा करनी चाहिये, अपने-आपको शक्ति की ओर खोले रखना चाहिये, जो कुछ उनकी इच्छा के विरुद्ध हो, उसका त्याग करना चाहिये और उन्हें अपने अंदर कार्य करने देना चाहिये-इसके साथ-साथ तुम्हें अपना सारा कार्य केवल उन्हीं के लिये करना चाहिये और इस विश्वास के साथ करना चाहिये कि तुम उन्हीं की शक्ति से वह कार्य कर सकते हो। इस तरह यदि तुम अपने-आपको खोले रखो तो यथा समय तुम्हें ज्ञान और अनुभूति अवश्य प्राप्त हो जायेंगी।

इस योग में सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि साधक भागवत प्रभाव की ओर अपने-आपको उन्मुक्त कर पाता है या नहीं। **अगर अभीप्सा सच्ची हो, और सभी बाधाओं के रहते हुए भी उच्चतर चेतना में उठ जाने का धीर-स्थिर संकल्प हों तो** किसी-न-किसी रूप में यह उन्मुक्ति **(आत्मोद्घाटन)** साधक में अवश्य आती है; पर मन, हृदय और शरीर के तैयार होने या न होने की अवस्था के अनुसार इसके आने में कम या अधिक समय लग सकता है; **अतएव साधक में यदि पर्याप्त धैर्य न हो तो आरंभ में आनेवाली कठिनाइयों के कारण वह अपना प्रयास छोड़ सकता है।** इस योग में इसके अतिरिक्त और कोई पद्धति नहीं है कि साधक अपनी चेतना को एकाग्र करे, विशेषकर हृदय में एकाग्र करे और श्रीमां की उपस्थिति और शक्ति का आह्वान् इसलिये करें कि वह उसकी सत्ता को अपने हाथ में ले लें और अपनी शक्ति की क्रियाओं के द्वारा उसकी चेतना को रूपांतरित करे। कोई चाहे तो अपने मस्तक में या भृकुटि के बीच भी चेतना को एकाग्र कर सकता है, परंतु अधिकांश लोगों के लिये इस तरह आत्मोद्घाटन करना अत्यंत कठिन होता है। जब मन शांत-स्थिर हो जाता है और एकाग्रता दृढ़ तथा **अभीप्सा तीव्र** हो जाती है तब अनुभूति का होना आरंभ हो जाता है। श्रद्धा-विश्वास जितना ही अधिक होता है उतनी ही शीघ्रता से परिणाम भी प्राप्त होने की संभावना होती है। शेष चीजों के लिये साधक को केवल अपने ही प्रयास पर नहीं निर्भर करना चाहिये, बल्कि भगवान् के साथ एक संपर्क स्थापित करने तथा शक्ति की उपस्थिति को ग्रहण करने की शक्ति प्राप्त करने में सफल होना चाहिये।

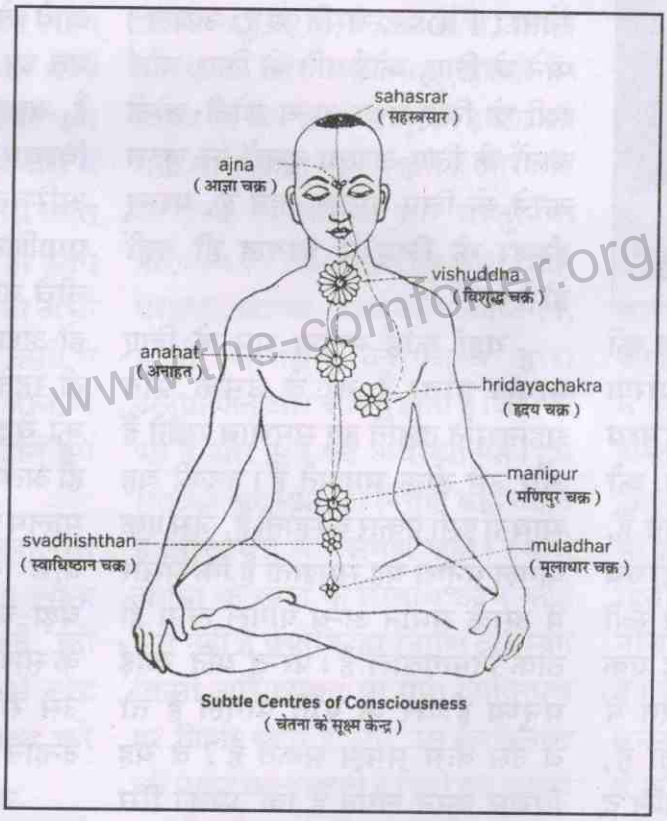

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

इस बात से कुछ भी आता-जाता नहीं कि तुम्हारी प्रकृति में क्या-क्या दोष भरे हैं। सबसे प्रधान बात है भागवत शक्ति की ओर अपने-आपको खोले रखना। कोई भी साधक बिना किसी सहायता के केवल अपने प्रयास से अपना रूपांतर नहीं कर सकता; **एकमात्र भागवत शक्ति ही साधक को रूपांतरित कर सकती है।** अगर तुम अपने-आपको खोले रखो तो बाकी सब कुछ तुम्हारे लिये कर दिया जायेगा।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

!!मेरे गुरुदेव!!

-स्वामी विवेकानन्द

यदि कोई मनुष्य जगत् की निस्सार वस्तुओं का त्याग कर देता है तो लोग उसे पागल कहते हैं। परन्तु ऐसे ही पुरुष पृथ्वी की संजीवनी होते हैं। ऐसे ही पागलपन से वे शक्तियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने इस संसार को हिला दिया है, और ऐसे ही पागलपन से भविष्य में ऐसी शक्तियों का जन्म होगा, जो हमारे संसार में उथल-पुथल मचा देंगी।

इस बात में भी तुम्हें भारत की एक विशिष्टता मिलेगी। साधारण हिन्दू स्त्री जिस अज्ञानान्धकार के मध्य रहती है, तथा जिस स्थिति को पाश्चात्य देश में परतन्त्रता कहते हैं, उसी स्थिति में परमोच्च आध्यात्मिक भाव-सम्पन्न इस स्त्री का आविर्भाव हुआ था। वह एक संन्यासिनी थी, क्योंकि भारत में स्त्रियाँ भी संसार त्याग करती हैं, अपनी सब सम्पति को तिलांजलि दे देती हैं, विवाह नहीं करती तथा अपना सारा जीवन ईश्वर-सेवा में ही अर्पण कर देती हैं। यह स्त्री वहाँ आयी और इस बालक के बारे में जब यह सुना कि वह जंगल में रहता है तो उसने उसके पास जाने तथा उससे भेंट करने की इच्छा प्रकट की। इसी स्त्री से उस बालक को सर्वप्रथम सहायता मिली। फौरन ही यह स्त्री उस बालक के क्लेश का रहस्य ताड़ गयी और उसने कहा, "मेरे बेटे, वह पुरुष धन्य है, जिसके ऊपर इस प्रकार का पागलपन आये-- वैसे तो सारा संसार ही पागल है; कोई धन के लिए, कोई सुख के लिए, कोई कीर्ति के लिए, और कितने ही लोग अन्य सैकड़ों वस्तुओं के लिए, कुछ लोग सोता (Floss, बसंत ऋतु, उछाल) पाने के लिए, कोई पति के लिए, कोई स्त्री के लिए तथा अन्य छोटी-छोटी बातों के लिए अथवा दूसरों पर जुल्म करने के लिए पागल रहते हैं, परन्तु ईश्वर के लिए वे पागल ही नहीं होते।

यहाँ कोई मनुष्य धन के लिए पागल होता है तो वे उसके प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए समभाव रखते हैं और उसे ठीक समझते हैं। उनकी यह भावना इसी प्रकार की होती है, जैसे एक पागल मनुष्य यह समझता है कि संसार में उसके समान अन्य पागल लोग ही ठीक दिमागवाले हैं। परन्तु यदि कोई मनुष्य ईश्वर के प्रति पागल है तो वे उसे कैसे समझ सकते हैं? वे यह विचार करने लगते हैं कि उसका सिर घूम गया है और कहते हैं कि उससे अलग ही रहना चाहिए।

यही कारण है कि वे तुझे पागल कहते हैं; परन्तु तेरा ही पागलपन ठीक है। वह पुरुष धन्य है, जो ईश्वर-प्रेम के कारण पागल हो-ऐसे मनुष्य बहुत ही थोड़े होते हैं।" यह स्त्री उस बालक के पास कई वर्षों तक रही और उसने उसे भारत की विभिन्न धर्म-प्रणालियों के साधन सिखलाये, अनेक प्रकार के योग-साधनों की दीक्षा दी और इस प्रचण्ड धर्म-स्रोत का मानो पथ-प्रदर्शन करके उसे समन्वित कर दिया।

तदुपरान्त उसी उपवन में एक विद्वान तथा तत्त्वज्ञानी संन्यासी आये। वे असाधारण पुरुष थे और उनका मत था कि जो कुछ दृष्टिगोचर होता है, वह सब मिथ्या है। वे इस बात में विश्वास नहीं करते थे कि संसार का अस्तित्व वास्तविक है और यह प्रमाणित करने के लिए वे कभी छत के नीचे नहीं रहते थे। चाहे घनघोर वर्षा हो अथवा कड़ी धूप, वे सदा खुले में ही रहते थे। ये संन्यासी उस बालक को वेदान्त सिखलाने लगे और शीघ्र ही अत्यन्त आश्चर्यजनक बात जो उन्हें मालूम हुई, वह यह थी कि उनका शिष्य कुछ विषयों में अपने गुरु से भी बढ़ा-चढ़ा है। ये संन्यासी उस बालक के साथ कई महीने रहे और उसके बाद उसे संन्यास-मार्ग की दीक्षा देकर उन्होंने प्रस्थान किया।

जब यह बालक मन्दिर का पुजारी था, उसी समय उसकी विचित्र प्रकार की पूजा देखकर लोगों को भ्रम हुआ कि इसके मस्तिष्क में कुछ हेर-फेर हो गया है और इसलिए उसके कुटुम्बी उसे घर लिवा ले गये और उसका विवाह एक छोटी सी कन्या से यह सोचकर करा दिया कि शायद इस रीति द्वारा ही इसके मस्तिष्क का संतुलन फिर ठीक हो जाय।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

योग के बारे में

-महर्षि श्री अरविन्द

मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने के लिए, अपने जीवन की असंख्य समस्याओं व कष्टों से मुक्ति पाने के लिए, भारतीय सिद्धयोग दर्शन को अंगीकार करना परमावश्यक है।

हमारा लक्ष्य होना चाहिये, उस तरह पूर्ण होना जैसे भगवान् अपनी सत्ता और आनंद में पूर्ण हैं। वैसा शुद्ध जैसे वे शुद्ध हैं, वैसा आनन्दमय जैसे वे आनन्दमय हैं और जब हम स्वयं पूर्णयोग में सिद्ध हो जायें तो समस्त मानव जाति को उसी भागवत पूर्णता में लाना। अगर हम अपने लक्ष्य के लिये अपर्याप्त हैं तो इसका कोई महत्त्व नहीं, जब तक कि हम अपने-आपको पूरी तरह इस प्रयास में लगाते हैं और उसमें सतत् निवास करते हैं और भले मार्ग पर दो इंच ही आगे बढ़े, फिर भी मानव जाति को जो अभी संघर्ष और धुंधलके में रहती हैं उसमें से उस प्रकाशमय आनन्द में आने में सहायता मिलेगी जिसमें भगवान् हमें ले जाना चाहते हैं।

हमारी तात्कालिक सफलता चाहे जैसी हो, हमारा अडिग लक्ष्य होना चाहिये, किसी रास्ते की सराय में या अपूर्ण चट्टी में लेट जाना नहीं बल्कि पूरी यात्रा को तय करना।

वह समस्त योग जो हमें संसार से पूरी तरह बाहर ले जाता है, दिव्य तपस्या का उच्च किन्तु संकीर्ण विशिष्टीकरण है। भगवान् अपनी पूर्णता में हर चीज का आलिंगन करते हैं, हमें भी सबका आलिंगन करना चाहिये। भगवान् समस्त अभिव्यक्ति और समस्त ज्ञान के परे, अपनी वैश्व सत्ता के परे हैं। जब कि यदि हम उसे देखते हुए या उसकी तरफ से मुँह मोड़ते हुए देखें तो वे वह हैं जो विश्व को धारण और उसका पोषण करते हैं। वे वह हैं जो विश्व बनता है, वे ही विश्व और उसके अंदर सब कुछ हैं।

वे निरपेक्ष और परम व्यक्तित्व भी हैं। जो विश्व में, विश्व के रूप में लीला कर रहे हैं, विश्व में वे उसकी अंतरात्मा और उसके प्रभु दीखते हैं। विश्व के रूप में, वे प्रभु की इच्छा की गति या प्रक्रिया मालूम होते हैं और गति के सभी आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ परिणाम हैं। ब्रह्म की सभी अवस्थाएँ, परात्पर, धारक, वैश्व और व्यष्टिगत, सभी भागवत व्यक्तित्व द्वारा अनुप्राणित और पोषित होती हैं। वे सत्ता भी हैं और सत् की अवस्था भी। हम सत् की अवस्था को निर्गुण ब्रह्म कहते हैं और सत्ता को सगुण ब्रह्म। हमारी चेतना के खेल के सिवाय उनमें कोई भेद नहीं है क्योंकि हर निर्गुण अवस्था किसी अभिव्यक्त या गुप्त व्यक्तित्व पर निर्भर होती है और उस व्यक्तित्व को प्रकट कर सकती है जिसे वह धारण करती और पर्दे में रखती है और हर व्यक्तित्व, अपने साथ एक निर्गुण सत्ता रखता है और उसमें डुबकी लगा सकता है। वे यह इसलिये कर सकते हैं क्योंकि वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक रूप एक निरपेक्ष सत्ता में आत्मचेतना की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ मात्र हैं।

दर्शन और धर्म भगवान् के अलग-अलग पहलुओं की प्राथमिकता के बारे में विवाद करते हैं। योगियों, ऋषियों और संतों ने इस या उस दर्शन या धर्म को ज्यादा पसंद किया है। हमारा काम उनमें से किसी के बारे में झगड़ना नहीं, बल्कि उन सबको चरितार्थ करना और सब बन जाना है, बाकी सबको फेंककर किसी एक रूप का अनुसरण करना नहीं बल्कि भगवान् का उनके सभी रूपों में और रूपों के परे आलिंगन करना है।

भगवान् ने बहुत से रूपों से इस धरती पर उतरकर मानसिक और शारीरिक रूपों को पूर्णता दी है, उसी को हम मानव जाति कहते हैं। वे जगत् में सबके ऊपर शासन करने वाली अन्तरात्मा के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, जिसके साथ अपनी रचनात्मक-इच्छा या शक्ति अस्तित्व की लय के साथ रहती है, जिसमें भौतिक तत्त्व सबसे नीचा और शुद्ध सत् सबसे ऊँचा पद है। मन और प्राण भौतिक तत्त्व पर (मन और प्राण अन्न पर) स्थित होते हैं और इनसे जगत्-सत्ता का निचला आधा भाग (अपरार्ध) बनता है। शुद्ध चेतना और शुद्ध आनन्द शुद्ध सत्ता में से निकलते हैं (परार्द्ध)। शुद्ध विचार (विज्ञान) इन दोनों के बीच कड़ी रूप में स्थित है। सत्ता के यह सात तत्त्व या पद ही पुराणों के सप्त जगत् के आधार हैं (सत्यलोक, तपस, जन, महर, स्वर, भुवर, और भूर)।

संदर्भ-श्री अरविन्द,
'मानव से अतिमानव की ओर'

क्रमशः अगले अंक में...

समर्थ सद्गुरुदेव श्री सियाग की तस्वीर से ध्यान

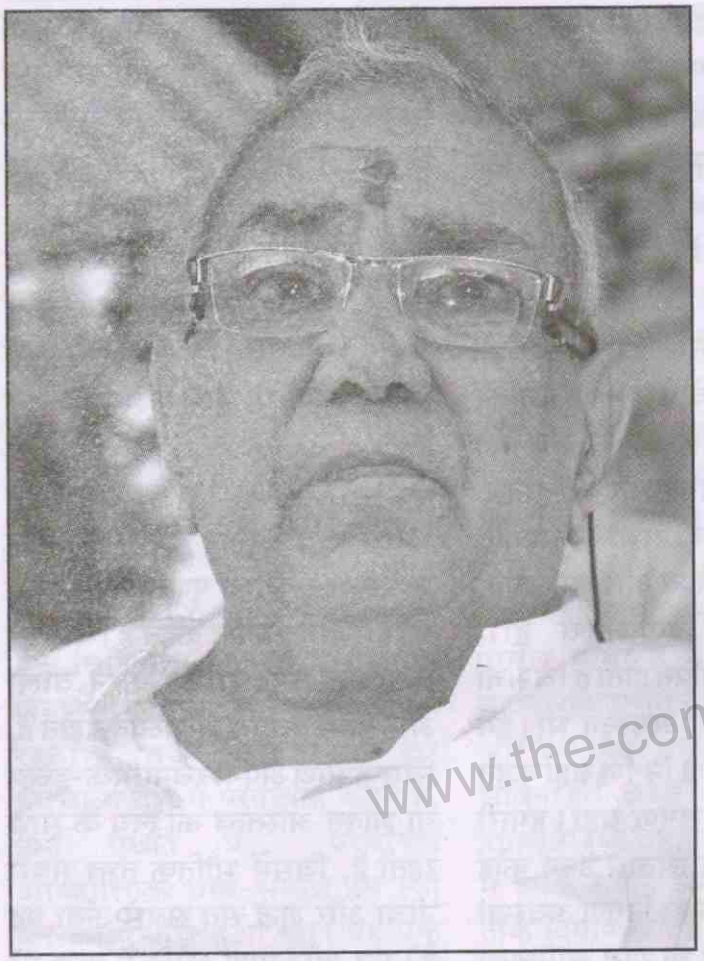

''मुझे दोनों सिद्धियाँ हो गई। पहले गायत्री (निर्गुण) की, फिर 1984 में कृष्ण की। श्री अरविन्द ने कहा है कि 'अगर दोनों सिद्धियाँ, एक ही व्यक्ति में, एक ही जन्म में हो जाए तो वो अमर हो जाएगा।' मतलब ''पार्थिव अमरत्व'' (Terrestrial Immortality) इस दुनिया में रहते हुए अमर हो जाएगा। इसलिए मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

कहानी...

कुसंग परमार्थ का बाधक

राजकुमार असमंजस के पिता महाराज सगर थे। सगर महान् धार्मिक थे। उन्होंने जीवन में एक बार भी अधर्म का आचरण नहीं किया था। उन्होंने पुत्र की प्राप्ति के लिये परमसमाधि के द्वारा भगवान् की आराधना की थी। इससे प्रसन्न होकर महर्षि औणव ने उन्हें दो प्रकार के पुत्र होने का वरदान दिया। उन्होंने महाराज को दोनों पत्नियों को यह वरदान दिया कि वे दोनों प्रकार के पुत्रों में से किसी को अपनी इच्छा के अनुसार चुन लें।

पहले वरदान में हजार पुत्रों की प्राप्ति होनी थी, दूसरे वरदान में एक ही पुत्र की प्राप्ति थी, किंतु इसी को वंशधर होना था। महारानी सुमति ने हजार पुत्र वाला वरदान माँगा। महाराज की दूसरी पत्नी केशिनी ने दूसरे वरदान को चुना था। केशिनी से असमंजस हुए, जिनका पुत्र अंशुमान् हुआ, जिसने सगर की वंश-परम्परा को आगे बढ़ाया।

असमंजस पहले जन्म में "योग" की साधना कर रहे थे। उन्हें पूर्वजन्म में ऊँची स्थिति प्राप्त हो गयी थी। सारी सिद्धियाँ उनके वश में थी। इस तरह वे परमार्थ के पथ पर बहुत दूर आगे निकल चुके थे। किंतु कुछ क्षण के कुसंग ने उन्हें पथ से च्युत कर दिया था। फलतः भगवान् तो न मिले, उन्हें दूसरा जन्म लेना पड़ा।

यह बात असमंजस को बचपन से ही याद थी। अतः वे प्रारम्भ से ही ममता से दूर रहते थे। वे इस प्रयास में रहते थे कि इस जन्म में किसी तरह की आसक्ति न हो जाय। परिवार का बंधन कठिन होता है। परिवार का कोई सदस्य इनसे स्नेह न करे, इसके लिये कभी-कभी वे पागलपन का भी अभिनय करते थे। कभी-कभी अनुचित कार्य भी कर बैठते थे। वे खेलते हुए बच्चों को सरयु नदी में फेंक देते थे, यह कितना अशोभनीय कार्य था? परिवार वाले उन्हें त्याग दें, इसके लिये ऐसा कर्म भी असमंजस को करना पड़ा था। इसका परिणाम यह हुआ कि सारी प्रजा और सारा परिवार असमंजस से अप्रसन्न हो गया। पिता को भी पुत्र-स्नेह की तिलांजलि देनी पड़ी। सबने मिलकर उन्हें घर से निकाल बाहर कर दिया।

राजकुमार असमंजस यही चाहते थे। वे प्रसन्नता से धूनी रमाने चल दिये। योगी किसी की हत्या नहीं करता। असमंजस ने वन जाने से पहले सभी बच्चों को जीवित कर, अपने पिता के चरणों में डाल दिया। बच्चे प्रसन्न थे। वे राजा का आशीर्वाद लेकर अपने-अपने परिवार में मिल गये। इस अद्भुत घटना को देखकर चारों ओर विस्मय की लहर फैल गयी। असमंजस पर लोगों का जो आक्रोश था, वह श्रद्धा में बदल गया। पिता के पश्चाताप की कोई सीमा नहीं थी, सब लोग असमंजस की खोज में जुट गये। लेकिन योगी को कौन पा सकता है? असमंजस भगवान् में युक्त हो गये थे। मानव-जीवन की यही तो सार्थकता है?

मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। वह उसके तद्रूप बन सकता है यदि उसको सत्य का संग मिल जाये!

मनुष्य दोराहे पर खड़ा है। यदि सत्य का संग मिल जाये जो अपने असली स्वरूप का साक्षात्कार कर, उसमें लय हो जाता है और यदि कुसंग में पड़ गया तो फिर लख चौरासी योनियों में भटकना पड़ता है।

इसलिए इस जन्म में जिनको समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की पावन शरण मिल गई है, वे इस अमूल्य ज्ञान धन और सद्गुरु शब्द का मूल्य समझें। आराधना के संबंध में जो भी करना है, वो सिर्फ सद्गुरुदेव के दिशा-निर्देशों में ही करें। गुरु और शिष्य के अलावा तीसरा कोई भी व्यक्ति आराधना पथ में नहीं आना चाहिए।

यदि आपको कोई पथ नहीं सूझ रहा है तो आप सद्गुरुदेव को याद करो, उनसे करूण प्रार्थना करो और उनके दिव्य शब्दों को याद करो-"आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। गुरु, अगर वास्तव में 'गुरु' हैं तो Omni-present (सर्वव्यापक) है।"

इसलिए किसी भी समस्या के समाधान के लिए परम सद्गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें।

सद्गुरुदेव के प्रति अपनी एकनिष्ठता बनी रहे, ऐसी करूण प्रार्थना करें।

कलियुग में सत्संग का सबसे उत्तम तरीका है, समय समय पर सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में उनके रिकॉर्ड प्रवचनों को सुनना। उनकी दिव्य वाणी में चेतना है। इसलिए उनकी आवाज सुनने से सात्विकता और चेतना का विकास होता है।

❖❖❖

"आप सुधरे, जगत् सुधरा"

अपने स्वयं का अवलोकन

मैंने जब से, सद्गुरुदेव से दीक्षा ली है उसके बाद मेरे जीवन में क्या बदलाव आया है ?
क्या मैं सघन मंत्र जप व नियमित रूप से ध्यान कर रहा हूँ ?
सद्गुरुदेव के प्रति एकनिष्ठता में, मेरी क्या स्थिति है ?

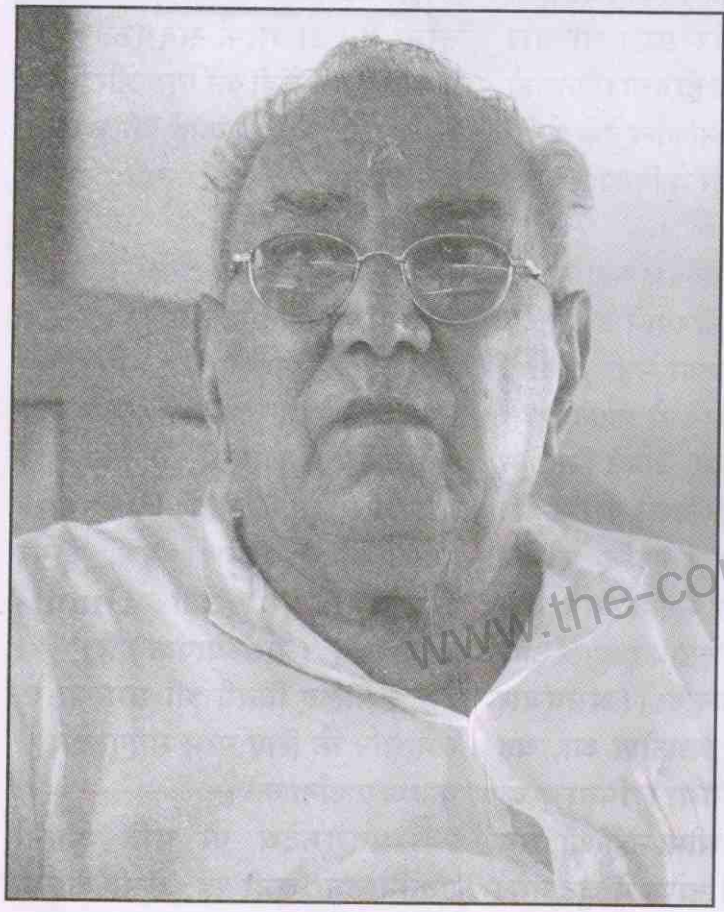

समर्थ सद्गुरुदेव सियाग से जुड़ा हुआ और जुड़ने वाला प्रत्येक साधक आराधना के लिए सद्गुरुदेव के इन दिव्य शब्दों पर ध्यान दें-

"नाम जप ही इस आराधना में आगे बढ़ने का ठोस आधार है।"

"केवल नाम जपो, नाम जप से ही आपका कल्याण होगा।"

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

अमरगढ़-गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 जुलाई 2018)

रायपुर (छत्तीसगढ़) - संजीवनी वृद्धाश्रम में वृद्धजनों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (29 जून 2018)

www.the-compassion.org

अश्विनी हॉस्पीटल, कोलाबा व नेवी नगर में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (17 से 21 जुलाई 2018)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा–कोटा में गुरु पूर्णिमा महोत्सव गुरुदेव की पूजा–अर्चना व 15 मिनट ध्यान कर मनाया गया। (27 जुलाई 2018)

गुरुदेव चरण पादुका का प्रक्षालन करते हुए साधक

गुरु पूर्णिमा महोत्सव – 27 जुलाई 2018 को गुरुदेव की पूजा–अर्चना व ध्यान करके मनाया गया।

डीडवाना (नागौर)

बैंगलोर (कर्नाटक)

मुरैना (म.प्र.)

सिद्धयोग द्वारा अल्सर और डेमेज लीवर का ठीक होना

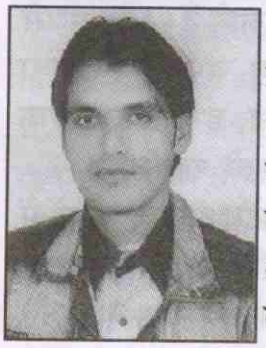

मेरी माताजी (कमल शर्मा) के अल्सर हो जाने के कारण अत्यधिक दवाईयाँ लेने से इनका लीवर डेमेज हो गया (लीवर सोराइसिस) जिसके कारण मेरी माता जी कोमा में चली गयी। अजमेर के जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में भर्ती करवाया। बहुत इलाज लिया परन्तु स्थिति में सुधार नहीं हुआ। आखिर हार कर डॉक्टरों ने उनकी घर पर सेवा करने का कह कर डिस्चार्ज कर दिया।

मेरे एक परिचित के कहने पर सन् 2011 में, मैं मेरी माता जी को चौपासनी जोधपुर स्थित सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के आश्रम ले गया। वहाँ पर सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी के साथ दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनाया गया। और सुबह शाम 15 मिनट ध्यान करने का कहा गया। 22 दिन कोमा में रहने के बाद धीरे-धीरे स्वस्थ होती गयी, तब से लेकर आजतक एक पैसे की गोली लिये बिना अभी पूर्णतः स्वस्थ है।

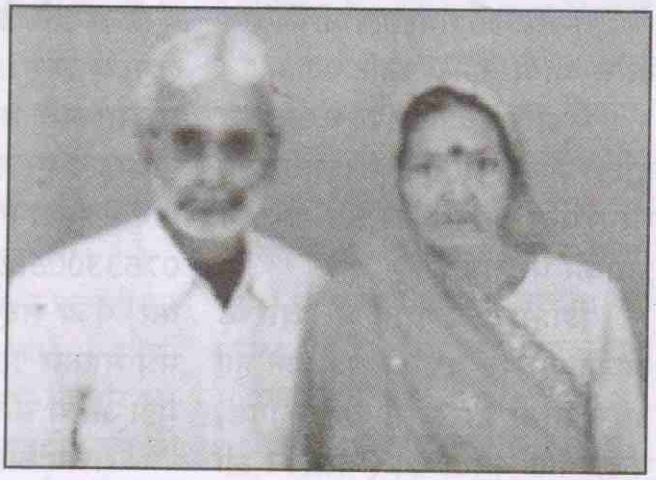

कभी-कभी परिचित डॉक्टरों से मेरी माता जी के बारे में चर्चा होती है तो वह कहते हैं कि यह कैसे जीवित है, यह हमारी डिक्शनरी अर्थात् हमारे सिलेबस से बाहर है। परन्तु आज पूर्णतः स्वस्थ है।

कैलाश चन्द शर्मा
पुत्र श्री शिवकरण शर्मा
मु.पो.-जालिया-2,
वाया-विजयनगर,
जिला-अजमेर

www.the-comforter.org

"धर्म ही सर्वोच्च ज्ञान है-वही सर्वोच्च विद्या है। वह न पैसों से खरीदा जा सकता है और न पुस्तकों से ही प्राप्त किया जा सकता है। तुम भले ही संसार का कोना-कोना छान डालो, हिमालय, आल्प्स, और काकेशस के शिखर पर चढ़ जाओ, अथाह समुद्र का तल भी नाप डालो, तिब्बत और गोबी-मरुभूमि की धूल छान डालो, पर जब तक तुम्हारा हृदय धर्म को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हो जाता और जब तक गुरु का आगमन नहीं होता, तब तक तुम धर्म को कहीं न पाओगे।

और जब ये विधातानिर्दिष्ट प्राप्त हो जायँ तो उनके निकट बालकवत्, विश्वास और सरलता के साथ अपना हृदय खोल दो, और उनमें साक्षात् ईश्वर के दर्शन करो। जो लोग इस प्रकार प्रेम और श्रद्धासंपन्न होकर सत्य की खोज करते हैं, उनके निकट सत्सस्वरूप भगवान् सत्य, शिव और सौन्दर्य के अलौकिक तत्त्वों को प्रकट करते हैं।"

-स्वामी विवेकानन्द वॉल्यूम-4 पृष्ठ-24

सद्गुरु कृपा से जीवन बदल गया

सर्व समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की जय हो

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

मैं प्रारब्ध वश 2014 में अत्यन्त दुःखी जीवन जी रहा था। शारीरिक, मानसिक और भौतिक रूप से भयंकर परेशान था।

शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अध्यापक पद पर कार्यरत होते हुए और साथ ही सभी कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ करता था (मसलन श्री गीताजी कंठस्थ थी) फिर भी भयंकर बैचेन, माता -पिता, बहिन, पत्नी, मित्रों आदि सभी से दुःखी रहता था।

एक दिन रेल यात्रा (नित्य आना-जाना) के दौरान गुरुभाई ने जो कि कोटा में कार्यरत है, गुरुदेव के बारे में बताया। मैंने खिन्न मन से यूँ ही परखने के लिये नाम जप करने लगा। सन् 2015 की कृष्ण जन्माष्टमी को मैंने पहली बार मोबाइल पर सद्गुरुदेव का दीक्षा मंत्र सुना। मंत्र के लिए 07533006009 नम्बर पर डायल कर, पूज्य सद्गुरुदेव का संजीवनी मंत्र सुनकर 15 मिनट ध्यान किया। मुझे आत्म संतोष प्राप्त हुआ।

बैचेन और नारकीय जीवन से कब देवत्व जीवन पर आ गया मैं स्वयं, बड़ा हैरान हूँ कि चलते राह मेरे जीवन को संवारने वाले साक्षात् सद्गुरु भगवान् मिल गए। और जो मुझे मिला उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। मां-बाप, गाड़ी-बंगला, अच्छी सेहत आदि, गुरुदेव की कृपा से सब मिल गया। संकल्प मात्र से बिगड़े कार्य हो जाते हैं। **और सबसे बड़ी बात नाम जप से निडरता आई है। और हर समय एक अजीब सी मस्ती रहती है।**

श्री सद्गुरुदेव आपके चरणों में मेरी प्रीति बनी रहे, अब कभी नाराज न होना। हम निरन्तर नाम जप और ध्यान करते रहें।

आपकी जय हो बारम्बार जय हो

-राजसिंह राजावत व.
अध्यापक (गणित)
बालाकुण्ड, रंगबाड़ी, मैन रोड़-कोटा
03-01-2018

सद्गुरुदेव के नाम जप व ध्यान से वृत्ति परिवर्तन

सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि कोटि नमन्। मैं पुखाराज, नागौर के कालेटड़ा (परबतसर) का रहने वाला हूँ। मैं सभी भारतीयों व सभी धर्मों के अनुयाईयों को कहना चाहता हूँ कि मेरे गुरुदेव में असीम शक्ति है जो आपको कहीं दूसरी जगह से नहीं मिल सकती (मेरी समझ के अनुसार) क्यों कि मैंने जो पाया है, मैं सोच नहीं सकता था कि ऐसी कोई शक्ति है।

जो एक बार 15 मिनट ध्यान व नाम जप से रोग व मन शरीर की बुरी आदतों को हटा सकती है। मैंने एक बार के ध्यान व नाम जप से ही जिस चीज को, मैं वर्षो से छोड़ नहीं पाया, वह एक दिन में ही छूट गई।

गुरुदेव की कृपा से, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि इस महान् सिद्धयोग से जुड़ जाओ, सारी जिन्दगी शान्ति से कट जायेगी।

मैं गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि यह दर्शन, विश्व दर्शन हो, इसमें मनुष्य मात्र का कल्याण हो।

-पुखराज
गाँव-कालेटड़ा
तहसील-परबतसर
जिला-नागौर (राज.)

गतांक से आगे....

मनुष्य और विकास

-श्री अरविन्द

मन अपने चक्र के बाहर नहीं जा सकता-गति या प्रगति की ऐसी सीधी लकीर के बारे में सारा विचार जो अनन्त रूप से ऊपर चढ़ती जाये या एक दिशा में अनन्त में बढ़ती जाये, एक भ्रम है। अगर मनुष्य की अंतरात्मा को मानवता के परे जाना है, जहाँ वह अतिमानसिक या और भी ऊँची स्थिति तक पहुँच सके तो उसे वैश्व-जीवन में से निकल कर आनन्द या ज्ञान के लोक अथवा जगत् में या अव्यक्त शाश्वत और अनन्त में जाना होगा।

वह अपनी चेतना के साथ बंधा रहता है और उससे अन्य चेतना में नहीं जा सकता। वह अपनी प्रकृति से बंधा रहता है और इन सीमाओं को लांघकर अन्य प्रकृति में नहीं जा सकता। अगर अनंत की चित्-शक्ति ने जड़ को अभिव्यक्त करने के बाद प्राण को अभिव्यक्त किया है और प्राण के बाद मन को अभिव्यक्त किया है तो यह जरूरी नहीं है कि वह अगली पार्थिव सृष्टि के रूप में अतिमानस को प्रकट करने के लिये आगे बढ़े क्योंकि मन और अतिमानस एकदम अलग गोलार्द्धों की चीजें हैं।

मन अज्ञान की निचली स्थिति की चीज है और अतिमानस उच्चतर स्थिति, दिव्य ज्ञान की वस्तु है। यह जगत् अज्ञान का जगत् है और यही रहने के लिये अभिप्रेत है। उच्चतर गोलार्द्ध की शक्तियों को अस्तित्व के इस निचले आधे में उतारने का या यहाँ पर उनकी छिपी हुई उपस्थिति को अभिव्यक्त करने का इरादा होने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अगर वे यहाँ उपस्थित हैं भी तो यह एक गुह्य अप्रेषणीय सर्वव्यापिता है और केवल सृष्टि को बनाये रखने के लिये है, उसे पूर्ण करने के लिये नहीं।

मनुष्य इस अज्ञानमय सृष्टि की पराकाष्ठा है। वह अपनी योग्यता के अनुसार उच्चतम चेतना और ज्ञान तक पहुँच चुका है; अगर वह और ऊँचा चढ़ने की कोशिश करेगा तो अपने मानसिकता के ज्यादा बड़े चक्रों में केवल चक्कर लगायेगा। क्योंकि यहाँ पर उसके जीवन का यही चक्र है, एक **सान्त चक्कर,** जो मन को अपने चक्करों में घुमाता है और हमेशा वहीं ले आता है, जहाँ से चला था।

मन अपने चक्र के बाहर नहीं जा सकता-गति या प्रगति की ऐसी सीधी लकीर के बारे में सारा विचार जो अनन्त रूप से ऊपर चढ़ती जाये या एक दिशा में अनन्त में बढ़ती जाये, एक भ्रम है। अगर मनुष्य की अंतरात्मा को मानवता के परे जाना है, जहाँ वह **अतिमानसिक** या और भी ऊँची स्थिति तक पहुँच सके तो उसे वैश्व-जीवन में से निकल कर आनन्द या ज्ञान के लोक अथवा जगत् में या **अव्यक्त शाश्वत** और **अनन्त** में जाना होगा।

यह सच है कि अब विज्ञान विकसनशील पार्थिव जीवन की पुष्टि करता है; लेकिन अगर वे तथ्य, जिनसे विज्ञान काम लेता है, विश्वसनीय है तो वे सामान्य नियम जिन्हें वह लागू करने का साहस करता है, वे अल्पजीवी हैं। वह उन्हें कुछ दशकों या शताब्दियों तक रखता है, फिर वह अन्य साधारण नियमों और वस्तुओं की अन्य परिकल्पनाओं में चला जाता है।

यह भौतिक विज्ञान में भी होता है जिसमें तथ्यों की ठोस रूप से जाँच की जा सकती है और परीक्षण से जाँचा जा सकता है। मनोविज्ञान में-जो यहाँ संगत है क्योंकि चेतना का विकास चित्र में आ जाता है। मनोविज्ञान में-जो यहाँ संगत है क्योंकि चेतना का विकास चित्र में आ जाता है- उसकी अस्थिरता जो और भी अधिक है, वह एक **परिकल्पना** के प्रतिष्ठित होने से पहले दूसरी पर चला जाता है, वस्तुतः कई परस्पर-विरोधी परिकल्पनाएँ एक साथ मैदान में होती हैं।

इन स्थान बदलती हुई चोर बालुओं पर कोई दृढ़ **तत्त्वदार्शनिक** इमारत नहीं खड़ी की जा सकती। आनुवंशिकता, जिस पर विज्ञान अपनी जीवन-विकास की धारणा का निर्माण करता है, निश्चय ही किसी जाति के प्रारूप को अपरिवर्तित सत्ता में बनाये रखने के लिये एक शक्ति है, एक यंत्र है।

यह प्रतिपादन बहुत संदिग्ध है कि वह सतत् और प्रगितशील परिवर्तन का भी **उपकरण** है। उसकी **प्रवृत्ति** विकसनशील नहीं, संरक्षी होती है। ऐसा मालूम होता है कि प्राण-शक्ति उस पर जो नया चरित्र लादने की कोशिश करती है, उसे वह मुश्किल से ही स्वीकार करती है।

सभी तथ्य यह बतलाते हैं कि कोई प्रारूप अपनी प्रकृति की विशिष्टताओं में रहते हुए अलग-अलग रूप ले सकता है लेकिन वह बतानेवाली कोई चीज नहीं है कि वह उसके परे जा सकता है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

अनुभव-प्रधान युग का आगमन

यह आविष्कार कि बच्चे की अपनी बौद्धिक एवं नैतिक शक्तियों को उनकी संभवनीय उच्चतम योग्यता तक विकसित करना ही शिक्षा का स्वरूप होना चाहिये और बच्चे की प्रकृति का मनोविज्ञान इसका आधार होना चाहिये। एक अधिक अनुभवात्मक और इसीलिये एक अधिक स्वस्थ प्रणाली की ओर पग बढ़ाना था; परंतु अभी भी इसमें एक त्रुटि थी, क्योंकि अभी भी इसमें बच्चे को एक ऐसी वस्तु समझा जाता था जिसे अपने हाथ में लेना और ढालना अर्थात् शिक्षित करना शिक्षक का कर्तव्य है।

तो भी इस धारणा में कम-से-कम इस अनुभूति की एक झलक अवश्य विद्यमान थी कि प्रत्येक मानव एक स्वयं-विकसनशील आत्मा है। और माता-पिता एवं शिक्षक दोनों का कार्य यही है कि वे बच्चे को इस योग्य बना दें और उसकी इस प्रकार सहायता करें कि वह स्वयं अपने को शिक्षित कर सके, स्वयं अपनी बौद्धिक, नैतिक, सौंदर्यग्राहक एवं व्यावहारिक क्षमताओं को विकसित कर सके और एक सजीव सत्ता के रूप में स्वतंत्रतापूर्वक संवर्द्धित हो सके, न कि उसे किसी जड़ लचीले पदार्थ के समान गूंथकर तथा सांचे में दबाकर किसी विशेष रूप में ढाल दिया जाये।

पर अभी तक न तो यह अनुभव द्वारा जाना गया है कि यह आत्मा क्या है, और न यह कि शिशु अथवा मनुष्य के संबंध में सच्चे रहस्य की बात यह है कि अपनी अधिक गहरी आत्मा एवं अंदर की वास्तविक अंतरात्म-सत्ता को प्राप्त करने में उसकी सहायता करनी चाहिये। यदि हम इस आंतरात्मिक सत्ता को कभी आगे आने के लिये अवसर दें और इससे भी बढ़कर यदि हम ''यात्रा के अग्रणी पुरोहित के रूप में'' अग्रभूमिका में इसका आह्वान करें तो यह शिक्षा का हमारा बहुत-सा कार्य अपने हाथों में ले लेगी, मन की उन निहित शक्तियों की उपलब्धि के लिये इसकी क्षमता का भी स्वयं विकास कर लेगी जिनके विषय में जीवन और मानवसंबंधी हमारी आधुनिक यंत्रानुवर्ती दृष्टि और उनके साथ व्यवहार करने की हमारी बाह्य बंधी-बंधायी पद्धतियाँ हमें कोई अनुभव नहीं प्राप्त करने देतीं और न कोई धारणा ही बनाने देती हैं।

शिक्षा की ये नवीन प्रणालियाँ इस प्रकार के अधिक सच्चे व्यवहार की ओर जानेवाले सीधे मार्ग पर अग्रसर हैं। प्राणमय एवं भौतिक मानसिकता के परदे के पीछे आंतरात्मिक सत्ता के साथ घनिष्ठतर संपर्क स्थापित करने के इस यत्न से और आत्मा की शक्यताओं पर बढ़ती हुई निर्भरता से हम इस अंतिम आविष्कार पर पहुँच जायेंगे कि मनुष्य आंतरिक रूप में एक आत्मा है एवं भगवान् की एक सचेतन शक्ति है, और यदि आत्मा अपनी सत्ता के गुप्त सत्य एवं गंभीरतम विधान को उपलब्ध करना तथा उसके अनुसार जीवन चलाना चाहती है तो अंदर के इस वास्तविक मानव का बाहर की ओर आह्वान शिक्षा का तथा वस्तुतः समस्त मानवजीवन का सच्चा उद्देश्य होना चाहिये।

यही वह ज्ञान था जिसे पुराने लोगों ने धार्मिक तथा सामाजिक प्रतीकवाद के द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया था और उस विस्मृत ज्ञान की ओर लौटने का मार्ग है अनुभववाद। पहले मनुष्य की आंतरिक अनुभूति को गंभीर बनाकर और संभवतः मानवजाति में अंतर्दृष्टि एवं आत्मज्ञान की अभूतपूर्व परिमाण में पुनः स्थापना करके अंत में उसकी सामाजिक एवं सामूहिक आत्माभिव्यक्ति में क्रांति उत्पन्न करना ही इसकी परिणति होगी।

इधर इस नवीन युग की तैयारी में यह नवजात अनुभववाद, व्यक्तियों के उन संबंधों में अथवा सामाजिक विकास की उन प्रधान विचारधाराओं एवं प्रवृत्तियों में जो अभी तक अधिकांश में बुद्धिवादी एवं जड़वादी हैं और गंभीरतर अनुभवात्मक प्रवृत्ति का केवल अस्पष्ट-सा ही संस्पर्श प्राप्त कर पायी हैं, उतना नहीं प्रकट हो पाया, किंतु मनुष्य की उस नवीन सामूहिक आत्म-चेतना में, उसके जीवन के उस सुघटित समुदाय में, जिसे उसने भूतकाल में सबसे अधिक दृढ़तापूर्वक विकसित किया है और जिसे हम राष्ट्र कहते हैं, वह प्रकट हो गया है।

इसी क्षेत्र में, चाहे प्राणमय अनुभववाद के रूप में अथवा आंतरात्मिक अनुभववाद के रूप में, इसने शक्तिशाली परिणाम उत्पन्न करने आरंभ भी कर दिये हैं और इसी क्षेत्र में अत्यंत सुस्पष्ट रूप में हमें दृष्टिगोचर होंगे इसकी वास्तविक दिशा एवं गति, इसकी न्यूनताएं, इसके खतरे एवं मानवता के अनुभव-प्रधान युग का सच्चा उद्देश्य और अवस्थाएँ, इस युग में प्रवेश प्राप्त करते हुए सामाजिक विकास-चक्र का लक्ष्य जिसकी ओर यह विशाल चक्कर लगाकर बढ़ना चाह रहा है।

समाप्त

संदर्भ-श्री अरविन्द
'मानव-चक्र' पुस्तक से

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव का प्रवचन

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में सद्गुरुदेव सियाग द्वारा की जाने वाली वैदिक दर्शन की व्याख्या

देखिए ! आप लोग जिस काम के लिए पधारे हैं, मैं आपको पहले उस दर्शन की थोड़ी सी जानकारी दे दूं। जिसे आज हिन्दू दर्शन कहा जाता है, ये **वैदिक दर्शन** का बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है। क्योंकि आज धार्मिक जगत् में कोई क्रियात्मक परिवर्तन नहीं आ रहा है। इसलिए पहले इस दर्शन से आपको थोड़ा सा परिचय करवा दूँ कि क्यूँ होगा ? कैसे हो रहा है ? क्या कारण है ? क्योंकि हिन्दू धर्म में कल्पना की कोई गुँजाईश नहीं है। कल्पना करवाई जा रही है, मुझे मालूम है।

मगर एक तरफ तो हमारा दर्शन कहता है कि वो परमतत्त्व कल्पनातीत है; फिर कैसी कल्पना ? आज तो हमने हिन्दू धर्म को बहुत संकीर्ण दायरे में कैद कर लिया है। हिन्दू तो **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के सिद्धान्त में विश्वास रखता है। मनुष्य मात्र को ईश्वर की सन्तान मानता है। वैदिक वाक्य है **"सर्वं खल्विदं ब्रह्म"** जो कुछ दिख रहा है, वह एक ही **परमसत्ता का विराट स्वरूप है**। विभिन्न रूपों में वो ही वो है, और कुछ है ही नहीं, ये दर्शन है वास्तव में।

देखिए ! ठीक है **उत्थान और पतन प्रकृति का एक अटल सिद्धान्त है**; उसे नहीं रोका जा सकता है तो उस सिद्धान्त के अनुसार हम लोग पतन के काल से गुजरते हुए आ रहे थे। एक अन्धकारपूर्ण युग है। कलियुग का आखिरी चरण चल रहा है। **कलियुग एक तरह से अब रात्रि का समय है**। अन्धकार में तो लोग चाँद और तारों के प्रकाश से ही काम चलाते हैं। इसलिए चाँद और तारों वाले धर्मों का बोलबाला है। तारा ईसाइयों का है-एक चाँद साथ में जोड़ दिया तो मुस्लिम धर्म हो गया। मगर उनकी लाईफ (जीवन) कितनी है ? अभी इनके 2000 साल पूरे हुए हैं। धार्मिक जगत् में दो हजार साल का कोई महत्त्व ही नहीं है; वो तो एक क्षण भर का बच्चा है। ये (सनातन धर्म) तो अनादि धर्म है; अनन्त धर्म है।

अब रात्रि का प्रहर है, इसलिए चाँद-तारे वाले धर्मों का बोलबाला हैं। मगर आप देखते हो जब **सूर्योदय** हो जाता है, चाँद-तारे आकाश में रहते तो हैं लेकिन उनकी कोई कीमत होती है क्या ? सूर्य उनका विरोध नहीं करता है, वो अपना काम करता है। मगर वो **अस्तित्व** (Existence) में रहते हुए भी दिन में प्रकाश के हिसाब से, संसार के लिए उनका कोई महत्त्व नहीं है। अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है। हमारे पतन के काल को **ऋषि-मुनि** नहीं रोक सके क्योंकि काल-चक्र अबाध गति से चलता है तो हम एक पतन के काल से गुजरते हुए आ रहे हैं।

हर चीज की एक सीमा होती है, पतन की भी एक सीमा होती है। जब नीचे जाने का स्पेस (जगह) ही नहीं है तो फिर उर्ध्वगमन शुरू हो जाता है। उत्थान चक्र शुरू हो जाता है तो इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया। संसार की कोई शक्ति, इस धर्म के उत्थान को रोक नहीं सकती। किसी में वो सामर्थ्य नहीं है तो आखिर ये धर्म है क्या ? क्यों परिवर्तन आता है ? कैसे आता हैं ? यह बहुत महत्त्वपूर्ण विषय है। मैं आपको इसकी पहले जानकारी दे दूँ। ताकि आप आगे जीवन में जो आराधना करोगे, उसमें जो भी परिवर्तन आयेगा, उससे आप अनभिज्ञ नहीं रहोगे। आपको पहले से ही उसकी दार्शनिक जानकारी होगी।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

यह सर्व विदित है कि विरोधी आसुरिक शक्तियाँ निम्नतर प्रकृति की क्रियाओं का लाभ उठाती हैं और उनके द्वारा सिद्धि को बिगाड़ने, नष्टभ्रष्ट करने या उसमें विलम्ब कराने की चेष्टा करती हैं।

विरोधी शक्तियाँ आक्रमण के लिये किसी भी जगह को चुनें और वह चाहे बाह्य मानवीय मन को कितनी छोटी क्यों न प्रतीत होती हो तो भी एक संगीन जगह बन जाती है, और उसे सौंप देने का अर्थ है किले की एक चाबी सौंप देना। यदि यह एक छोटा सा गुप्त द्वार हो, और वे उसमें प्रवेश कर सके तो उनके लिये इतना ही पर्याप्त है।

इस महान् मार्ग में कोई भी चीज वस्तुतः क्षुद्र और गौण नहीं होती। विशेषकर, जब संघर्ष नीचे भौतिक स्तर तक आ जाता है तो इन भेदों का मूल्य नहीं रह जाता क्योंकि वहाँ 'क्षुद्र' चीजों का संकेतक मूल्य ऐसा नहीं होता, जिसका आसानी से हिसाब लगाया जा सके और वे बड़ी महत्त्व की होती हैं। हो सकता है कि उस स्तर पर एक छोटी सी चौकी गंवाना एक बड़ी लड़ाई में हार को अवश्यम्भावी बना दे। तुम जिन कसौटी और अग्नि-परीक्षाओं में से गुजर रहे हो, उनमें से सबको गुजरना पड़ा है।

यदि सम्भव होता तो हम तुम्हें इससे बचा लेते, पर क्योंकि अब ये आ गई हैं तो हम तुमसे अड़े रहने और इसे जीतने की आशा करते हैं। धैर्य, शांतिपूर्ण सहनशीलता लक्ष्य तक पहुँचने एवं जीतने का धीर-स्थिर निश्चय, तुम से इन गुणों की माँग की गई है-कम आडम्बरपूर्ण, पर अधिक सारभूत एवं ठोस वीरोचित गुणों की और कुशाग्रता एवं जागरूकता भी। अपने भीतर की कठिनाई की ओर से अपनी आँखें बन्द न कर लो और न उससे मुख ही मोड़ो किन्तु साथ ही इसके कारण अपने को निरुत्साह भी न होने दो। यदि हम लगे रहें तो विजय निश्चित है और ऐसी विजय के लिये कठिनाई और प्रयास की ऐसी कौनसी कीमत है जो बहुत भारी हो सकती है ?

हां, निश्चय ही। मनुष्य निरन्तर विरोधी शक्तियों द्वारा आक्रान्त हो रहे हैं। बहुत बड़ी संख्या में मनुष्य अंशतः या संपूर्णतः उनके प्रभाव के अधीन हैं। कुछ लोगों को उन्होंने अधिकृत कर लिया है, दूसरे (थोडे से) लोग विरोधी सत्ताओं की साकार मूर्तियाँ ही हैं। वर्तमान समय में सारी पृथ्वी पर वे बहुत सक्रिय हैं।

निस्सन्देह, बाहरी जगत् में कोई ऐसी चेतना नहीं है जैसी कि 'योग' में विकसित होती है, जिससे कि लोग या तो उनके आक्रमण के विषय में सचेतन हों या उसे ज्ञानपूर्वक हटा सके। उनके अन्दर चैत्य पुरुष और विरोधी शक्तियों का संघर्ष अधिकांश में पर्दे के पीछे चल रहा है अथवा जहाँ तक वह ऊपरी सतह पर है, उसे भी लोग मन के द्वारा नहीं समझ पाते।

अधिकार जमानेवाली (विरोधी) सत्ता का पहला प्रयत्न होता है व्यक्ति को उसके चैत्य पुरुष से पृथक् कर देने का, और बस इसी के कारण संघर्ष भी उत्पन्न हो जाता है। सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि अधिकार किस हद तक किया गया है और वह कितना स्थायी है--सत्ता का कितना अंश उसने अधिकृत किया है और वह अधिकार निरन्तर बना रहता है या नहीं।

तुम हस्तिब्रह्म की कहानी नहीं जानते ? सब कुछ ब्रह्म ही है, किन्तु कर्म में तुम्हें हाथी के साथ हस्तिब्रह्म के रूप में और असुर के साथ असुरब्रह्म के रूप में ही व्यवहार करना चाहिये न कि केवल विशुद्ध और सीधे सादे ब्रह्म के रूप में। व्यक्ति को या तो राक्षस से बचना होगा या उसका पराभव करना होगा।

अन्यथा राक्षस मनुष्य को खा सकता है, यद्यपि दोनों ही पूरी तरह ब्रह्ममय हैं। ब्रह्म की उपलब्धि तब तक एक आन्तरिक निष्क्रिय उपलब्धि है जब तक मनुष्य भागवत चेतना और शक्ति का गतिशील उपकरण नहीं बन जाता-तब, हाथी और राक्षस की समस्या ही नहीं पैदा होगी क्योंकि तब प्रत्येक मामलेमें जो कुछ करना है उसे भागवत चेतना जान लेगी और भागवत शक्तिक्रियान्वित करेगी।

भीतर वैर-भाव रखने की जरूरत नहीं है, पर राक्षस के साथ मित्रता रखना भी बुद्धिमत्ता नहीं है क्योंकि राक्षस ऐसी वस्तुओं से प्रभावित नहीं होता --वह उसका लाभ अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होने के लिये ही उठायेगा।

संदर्भ-अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव का महाप्रस्थान

"जो भोग था वह मेरे ऊपर हो गया। अब तुम लोगों में से और किसी को कष्टभोग नहीं करना होगा। जगत् के सभी लोगों के लिए मैं भोग कर गया।" माताजी को प्रतीत हुआ कि लोककल्याणार्थ अवतीर्ण श्रीरामकृष्ण का यथार्थ मनोभाव यही है।

जिस उद्देश्य से श्रीरामकृष्णदेव ने नरदेह धारण किया था, वह अब पूरा हो चला था।

युगधर्म के प्रचार के लिए उन्होंने अपने त्यागी अंतरंगों का जीवन भी गढ़ लिया था और उन्हें जीवोद्धार के व्रत में आत्मनियोग करने की प्रेरणा दी थी। वे जानते थे कि नरेंद्रनाथ ही उनका योग्य उत्तराधिकारी है और इसी कार्य के लिए उसका आगमन हुआ है। देहत्याग के कुछ ही दिन पहले उन्होंने नरेंद्र को बुलाकर कहा-"इन सब लड़को को तेरे हाथों में सौंप रहा हूँ। तू इनकी देखरेख करना।" इसके बाद उन्होंने नरेंद्र को 'जगद्धिताय' संघबद्ध जीवन बिताने के बारे में बहुत उपदेश दिये। महाप्रस्थान के कुछ दिन पहले से ही वे नरेन को सायं-प्रातः अपने पास बुलाकर दरवाजा बंद करके काफी देर तक विविध गोपनीय निर्देश दे रहे थे।

श्रीसारदादेवी तथा अपने अन्य त्यागी शिष्यों पर युगधर्मप्रचार तथा जीवोद्धार का दायित्व सौंपने के बाद श्रीरामकृष्ण महाप्रस्थान की तैयारी करने लगे। यह सब देखकर माताजी से न रहा गया। दैवी प्रतिकार का प्रयास करने की इच्छा से वे एक संगिनी को लेकर तारकेश्वर गयीं। श्रीरामकृष्ण ने इसमें कोई आपत्ति नहीं की। वहाँ पहुँचकर उन्होंने दो दिन तक निर्जल उपवास किया, फिर भी उन्हें देवता की प्रसन्नता का कोई आभास नहीं मिला। तीसरे दिन वे महादेव को प्रणाम कर काशीपुर लौट आयीं। सब कुछ जानते हुए भी श्रीरामकृष्ण ने भोलेपन के साथ पूछा - "क्यों जी ! कुछ हुआ? कुछ भी नहीं ?"

एक और घटना से श्रीसारदादेवी को पता चल गया था कि श्रीरामकृष्ण अब तिरोधान के लिए प्रस्तुत हो चुके हैं। एक रात उन्होंने देखा कि माँ काली गला टेढ़ा किये हुए हैं। पूछने पर माँ काली ने श्रीरामकृष्ण के गले का घाव दिखाकर कहा - "उसके कारण मेरे भी

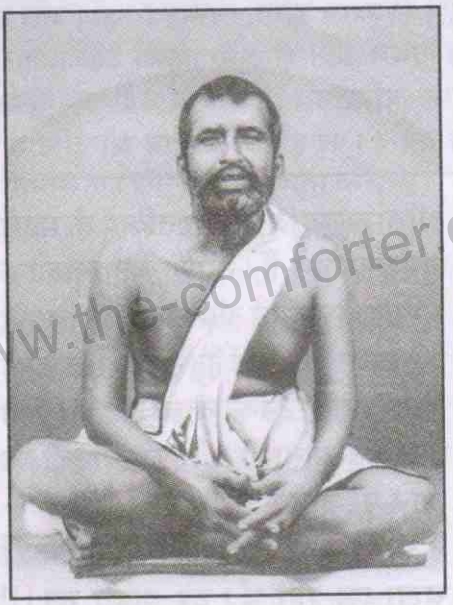

हुआ है।" श्रीसारदादेवी समझ गयीं कि स्वयं माँ काली भी श्रीरामकृष्ण के कष्ट से पीड़ित होकर भी यदि उसे अच्छा नहीं कर सकतीं, तो फिर मनुष्य की भला क्या बिसात? इतना ही नहीं, श्रीरामकृष्ण ने अपनी रागयातना का और भी एक गंभीर तात्पर्य श्रीसारदादेवी को बताया था - "जो भोग था वह मेरे ऊपर हो गया। अब तुम लोगों में से और किसी को कष्टभोग नहीं करना होगा। जगत् के सभी लोगों के लिए मैं भोग कर गया।" माताजी को प्रतीत हुआ कि लोककल्याणार्थ अवतीर्ण श्रीरामकृष्ण का यथार्थ मनोभाव यही है।

जिस उद्देश्य से श्रीरामकृष्णदेव ने नरदेह धारण किया था, वह अब पूरा हो चला था। अतः उन्हें अब अपने चिन्मयधाम को लौट जाना था। महासमाधि के आठ या नौ दिन पहले एक दिन उन्होंने योगीन को पंचांग लाने का आदेश दिया और वंगीय श्रावण के पच्चीसवें दिन के बाद से प्रतिदिन का तिथि-नक्षत्र आदि पढ़ने को कहा। योगीन पढ़ रहे थे और श्रीरामकृष्ण आँखों मूँदे सुने जा रहे थे। श्रावण-संक्रांति तक पढ़ना हो जाने पर उन्होंने योगीन को पंचांग बंद करने का संकेत किया। उस समय भला यह कौन सोच सकता था कि वे अपने देहत्याग का दिन निश्चित कर रहे थे !

श्री रामकृष्णदेव की मानसिक अवस्था में तेजी से परिवर्तन हो रहा था। अब उनका मन सदा निर्गुण-निराकार की ओर ही दौड़ रहा था-यहाँ तक कि 'विद्या का मैं' भी मानो लुप्त हुआ जा रहा था। उन्होंने कहा - "हाँ ! अब लोकशिक्षा बंद हो रही है। और बोल नहीं पा रहा हूँ, सब कुछ राममय देख रहा हूँ।

www.the-comforter.org

कभी-कभी मन में आता है कि किससे कहूँ। देखा-साकार से संग निराकार हुआ जा रहा है। सब कुछ बोलने की इच्छा हो रही है, पर नहीं बोल पा रहा हूँ। मानो कोई मुँह बंद कर देता है। ..... अब भी देख रहा हूँ-**निराकार, अखंड सच्चिदानंद से ही यह सब हुआ है।**''

विविध क्रियाकलापों और बातों के माध्यम से श्रीरामकृष्ण संकेत देने लगे कि अब **नित्यधाम** में जाने का समय आ पहुँचा है। एक दिन उन्होंने शशी को सारदादेवी को बुला लाने के लिए भेजा और कहा कि वह बड़ी बुद्धिमती है, वह मेरी अवस्था को समझ सकेगी। उनके आ जाने पर श्रीरामकृष्ण ने उनसे कहा - ''**देखो जी, पता नहीं क्यों मेरे मन में सदा ब्रह्मभाव की उद्दीपना हो रही है।**'' माताजी भला क्या कहती ! श्रीराकृष्ण का अस्थिचर्ममय दुर्बल शरीर देखकर उन्होंने व्यथित हृदय से उन्हें दो-चार **सांत्वनापूर्ण** बातें कहीं और स्वयं एकांत में जाकर अश्रुपात करने लगी। वे समझ गयी थी कि श्रीरामकृष्ण का मन अब **निम्नभूमि पर न लौटेगा**, अब वह पूर्णरूप से ब्रह्मलीन होने को है।

अब देहधारण के बस दो ही दिन बचे थे। **श्रीरामकृष्ण असह्य रोग यंत्रणा से पीड़ित थे।** उनके रोग को लेकर सभी बहुत व्यग्र थे। नरेंद्र उनके बिस्तर के पास ही मुँह नीचा किये हुए बैठे थे। अचानक उनके मन में यह विचार आया कि इस भीषण शारीरिक कष्ट के बीच भी वे यदि स्वयं को अवतार कहें, तभी मुझे विश्वास होगा, अन्यथा नहीं। और आश्चर्य ! ! नरेंद्र के मन में यह विचार उठते ही श्रीरामकृष्ण उनकी ओर मुँह करके बोल उठे-''अभी तक अविश्वास ! जो राम बने, जो कृष्ण बने, वे ही इस बार रामकृष्ण बने हैं। पर हाँ ! तेरे वेदांत की दृष्टि से नहीं।'' इस देववाणी को सुनकर नरेंद्र लज्जित हो, अपराधी की तरह सिर नीचा किये बैठे रहे। उनका हृदयमंथन हो, आँसुओं की धार बह निकली। उन्होंने चिरकाल के लिए उन्हें अवतार के रूप में स्वीकार किया और बाद में उन्हें '**अवतारवरिष्ठ**' कहा।

15 अगस्त 1886 ई. रविवार। यह श्रीरामकृष्ण की नरलीला का अंतिम दिवस है। दुर्बल शरीर श्रीरामकृष्ण बिस्तर पर तकिये के सहारे चुपचाप बैठे हैं। आशा का आलोक धूमिल हो चुका है और चारों ओर विषाद की छाया फैली हुई है। सभी सोच रहे हैं कि संभवत: उनकी वाचा बंद हो चुकी है। किंतु माताजी और लक्ष्मीदेवी के आने पर उन्होंने सहज स्वर में कहा - ''**आयी हो ? देखा। मानो मैं कहाँ चला जा रहा हूँ। दूर-बहुत दूर।**'' माताजी को रोते देखकर वे आवेगपूर्ण कंठ से कहने लगे - ''तुम लोगों को चिंता क्या ? तुम जैसी थी वैसी ही रहोगी, और उन्होंने (नरेंद्र आदि) मेरे लिए जैसे किया है, वैसे ही तुम्हारे लिए भी करेंगे।''

अचानक उनके (स्वामी विवेकानन्द) मन में यह विचार आया कि इस भीषण शारीरिक कष्ट के बीच भी वे यदि स्वयं को अवतार कहें, तभी मुझे विश्वास होगा, अन्यथा नहीं। और आश्चर्य ! ! नरेंद्र के मन में यह विचार उठते ही श्रीरामकृष्ण उनकी ओर मुँह करके बोल उठे-''अभी तक अविश्वास ! जो राम बने, जो कृष्ण बने, वे ही इस बार रामकृष्ण बने हैं। पर हाँ ! तेरे वेदांत की दृष्टि से नहीं।''

भक्तों के निराश हृदय में आज श्रीरामकृष्ण का एक नया ही रूप प्रकट हुआ। नाड़ी असंबद्ध और मंद है, फिर भी वे भक्तों के साथ ईश्वरीय बातें किये जा रहे हैं और किसी-किसी के मुँह पर हाथ फेरकर प्यार कर रहे हैं। संध्या होने के पहले से ही उन्हें साँस लेने में तकलीफ होने लगी। भक्तगण उनकी शय्या के पास, उन्हें घेरे नीरव आँसू बहा रहे थे। विदा की करुण ध्वनि से मानो चाँदनी आच्छन्न है और हवा सिसकियाँ भर रही है। अतुलकृष्ण ने नाड़ीपरीक्षा की और हालत बहुत संकटपूर्ण बतायी। सेवकगण रोने लगे। जिस **आलोक** ने उनके समस्त जीवन को आलोकित किया, अब उसी के बुझने का समय आ गया था।

संध्या के बाद उन्हें थोड़ी भूख सी लगी। सेवकों ने उन्हें उनका दैनिक आहार दिया, पर वह उनके गले से नीचे नहीं उतरा। सहसा उन्हें गहरी समाधि लग गयी। शरीर नि:स्पंद स्थिर हो गया। इस समाधि की विशेषता को समझकर शशी रोने लगे। तुरंत गिरीश और रामचंद्र को बुलावा भेजा गया। आधी रात को श्रीरामकृष्ण की बाह्यचेतना लौटी और उन्होंने फिर कुछ खाने की इच्छा व्यक्त की। तकियों का सहारा देकर उन्हें बैठाया गया। थोड़ासा पथ्य उन्होंने बिना कष्ट के पान किया और कहा कि अब मैं अच्छा अनुभव कर रहा हूँ। नरेंद्रनाथ ने उनसे थोड़ा सोने का अनुरोध किया। उसी समय उन्होंने स्वाभाविक कंठस्वर में जोर से तीन बार 'काली' नाम का उच्चारण किया और धीरे-धीरे बिस्तर पर लेट गये।

रात नि:स्तब्ध थी-केवल झिल्लियों की झनकार सुनाई पड़ रही थी। रात को 1 बजकर 2 मिनट पर (दूसरे मत के अनुसार 1 बजकर 6

मिनट पर) सहसा श्रीरामकृष्ण का शरीर वारंवार पुलक के साथ रोमांचित हो उठा। आँखें स्थिर तथा दृष्टि नासाग्र में स्थित हो गयी। अंग-प्रत्यंग से एक अभूतपूर्व दिव्यानंद का स्पंदन फूट पड़ा। वे फिर गहरी समाधि में डूब गये। यही उनकी अंतिम समाधि थी जो बाद में महासमाधि में प्रणित हुई। श्रीरामकृष्णदेव स्व-स्वरूप में विलीन हो गये।

श्रीसारदादेवी "मेरी माँ काली ! तुम मुझे किस दोष के कारण छोड़ गयीं ?" कहते हुए जमीन पर गिर पड़ी और जोर-जोर से विलाप करने लगीं।

श्रीरामकृष्णदेव का शरीर थोड़ा गरम था इसलिए लोगों को लगा कि शायद यह उन्हें हररोज लगने वाली समाधि ही है। विश्वनाथ उपाध्याय (कप्तान) ने उनकी समाधि भंग करने के लिए उनके गले और मेरुदंठ पर पुराने घी की मालिश करने को कहा। शशी आदि सेवक घी मलने लगे। दोपहर तक सभी उनकी समाधि भंग होने की प्रतीक्षा करते रहे। दोपहर में लगभग एक बजे डॉक्टर सरकार आये और अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद बोला कि उनकी प्राणवायु लगभग आधे घंटे पहले निकल चुकी है। फिर गेरुआ वस्त्र, पुष्पमाला, चंदन आदि से सजाकर श्रीरामकृष्णदेव की पावन देह को नीचे उतारा गया, जहाँ उनके लिए एक नयी खाट पर कोमल शय्या सजायी हुई थी।

श्रीरामकृष्णदेव के महानिर्वाण का समाचार बिजली के समान सारे नगर में फैल गया। उनके पावन शरीर का अंतिम दर्शन करने चारों ओर से लोग आकर काशीपुर में एकत्र होने लगे। उनका आनंद से उद्भासित मुखमंडल, रोमांचित शरीर और दिव्य ज्योतिर्मय रूप के दर्शन कर सभी चकित रह गये। डॉक्टर सरकार के निर्देश पर भक्तों से परिवृत श्रीरामकृष्णदेव की देह का एक फोटोग्राफ लिया गया। फिर भक्तगण एक साथ मिलकर उच्च स्वर से हरिनाम लेते हुए, उनकी पावन देह को कंधे पर लिये, वराहनगर श्मशान की ओर बढ़े। श्रीरामकृष्णदेव की अंतिम झलक पाने के लिए रास्ते के दोनों ओर खड़े अनगणित नरनारी अश्रुनीर से उन्हें श्रद्धांजलियाँ अर्पित कर रहे थे। भक्तों के विशेष अनुरोध पर त्रैलोक्यनाथ सान्याल ने चिता के पास बैठकर अपने भावभीने कंठ से श्रीरामकृष्णदेव के प्रिय कुछ भजन गाये। तत्पश्चात् उनके अंतरंग शिष्यों ने चिता में अग्नि दी। थोड़ी ही देर में उनकी पंचभौतिक देह भस्मसात् हो गयी। दाहकर्म हो जाने के बाद भक्तों ने उनका भस्मावशेष तथा पवित्र अस्थियाँ एक कलश में रखीं तथा उसे सिर पर उठाकर "जय भगवान् श्रीरामकृष्णदेव की जय" ध्वनि करते हुए काशीरपुर उद्यानभवन में लौट आये। उस पावन अस्थिकलश को उन्होंने श्रीरामकृष्णदेव के बिस्तर पर रखा। रात में शोक से व्याकुल श्रीसारदादेवी विधवा का वेश धारण करने लगीं। अपने अंग से, एक-एक कर उनहोंने सभी आभूषण उतार डाले। अंत में जब वे अपने हाथों से सोने के कंगन उतार रही थीं, तब अचानक श्रीरामकृष्णदेव प्रगट हुए और उनका हाथ पकड़कर बोले - "**मैं क्या मर गया हूँ जो तुम सुहागिन की वस्तु हाथ से निकाल रही हो ! कंगन मत निकालो।**" माताजी के हाथ में सोने के कंगन रह गये।

इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से श्रीरामकृष्णदेव का प्रगट होना और प्रेमपूर्वक बातें करते हुए, माताजी को सांत्वना प्रदान करना- संवाद पाकर भक्तगण विस्मित हो उठे। इस विस्मय ने उनके हृदय की शून्यता को मानो पाट डाला। उनके मन में एक नयी आशा और उद्दीपना का संचार हुआ। वे इस संकट की घड़ी में श्रीरामकृष्णदेव को और भी स्पष्ट तथा व्यापक रूप से अंदर-बाहर सर्वत्र अनुभव करने लगे। वे समझ गये कि श्रीरामकृष्णदेव के देहावसान होने से ही सब समाप्त नहीं तथा उनका सभी प्रकार से कल्याण करते हैं।

> जिस आलोक ने उनके समस्त जीवन को आलोकित किया, अब उसी के बुझने का समय आ गया था। **वे समझ गये कि श्रीरामकृष्णदेव के देहावसान होने से ही सब समाप्त नहीं था उनका सभी प्रकार से कल्याण करते हैं।**

श्रीसारदादेवी की व्यवस्था के अनुसार दूसरे दिन दोपहर में भक्तों की उपस्थिति में श्रीरामकृष्णदेव के पवित्र अस्थिकलश के समक्ष उनका विशेष पूजन व भोग आदि संपन्न हुआ। उन्होंने जो माताजी से कहा था - "**अजी ! तुम लोग चिंता मत करो। इसके बाद घर-घर में मेरी पूजा होगी।**" इसीलिए श्रीरामकृष्णदेव की पूजा का सर्वप्रथम माताजी ने ही श्रीगणेश किया। उसके बाद धीरे-धीरे सभी अंतरंग पार्षद और भक्त गण श्रीरामकृष्णदेव को केंद्र बना कर उनके श्रीचरणों में एकत्र हुए।

❖❖❖

योग का परम लक्ष्य मोक्ष है-रोग नहीं

''अब रोग भी खत्म हो रहे हैं इसीलिए संसार बड़ा आकर्षित हो रहा है। ये बात भी सही हैं कि मेरे पास इस देश में 90 प्रतिशत लोग रोग के लिए आते हैं। मैं आपको बताऊँ कि योग क्या है? रोग क्या है?

योग के बारे में बड़ी भ्रांतियाँ है- पूरी दुनिया में। आज योग का कहीं वर्णन आएगा तो आपके दिमाग में एक ही बात आएगी कि कोई रोग है, इसको शारीरिक कसरत करवाई जाएगी।

जबकि योग का संबंध रोग से है ही नहीं। इस वक्त का, ''पतंजलि योग दर्शन'' Authentic (प्रामाणिक) ग्रंथ है, उसको उठाकर देख लो। उसके 195 सूत्रों में कहीं भी रोग का वर्णन नहीं हैं। हमारा दर्शन तो मोक्ष की बात करता है और मोक्ष आज एक कल्पना की चीज है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

❖❖❖

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

10 TUE SEPTEMBER 1996

AUGUST	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2	3
	4	5	6	7	8	9	10
	11	12	13	14	15	16	17
	18	19	20	21	22	23	24
	25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6	7
	8	9	10	11	12	13	14
	15	16	17	18	19	20	21
	22	23	24	25	26	27	28
	29	30					

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश-और पृथ्वी के मिलन की बात कहता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञानकारी बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मांगती है, और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शक्ति कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

16-1-2006 जोधपुर AVSK

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

मनुष्य योनि सर्वोत्तम योनि है। इसको सुफल्य बनाने के लिए उसे सर्व प्रथम चार कर्ज चुकाने आवश्यक है। (1) माता-पिता का कर्ज (2) कुल की देवी का कर्ज (3) कुल के देवता का कर्ज (4) अपने सद्गुरुदेव का कर्ज।

इस प्रकार मैं, अभी तक सिर्फ एक ही कर्ज से मुक्त हूँ। क्योंकि मनुष्य जन्म लिया है, अतः सांसारिक रीति-रिवाजों की पालना करना बहुत जरूरी है।

"The key concept of Hinduism"

"The four Purushartha or Goal of life."

"Dharma", "Artha", "Kama", and "Moksha" constitute the four goals of life. Dharma does not only mean religion but also morality, righteousness and duty. Artha or attainment of wealth is considered another desirable goal of life. The third goal is "Kama" or sexual pleasure "Moksha" or release from the birth cycle is the final goal that an individual has to strive for."

हिन्दू-धर्म का सच्चा अर्थ है कि मानव-जीवन में मनुष्य उपरोक्त पुरुषार्थों का भरपूर उपयोग करें, क्योंकि भोग के बिना विरक्ति असम्भव है और विरक्ति के बिना "मोक्ष" असम्भव है।

16-1-2006 जोधपुर AVSK

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

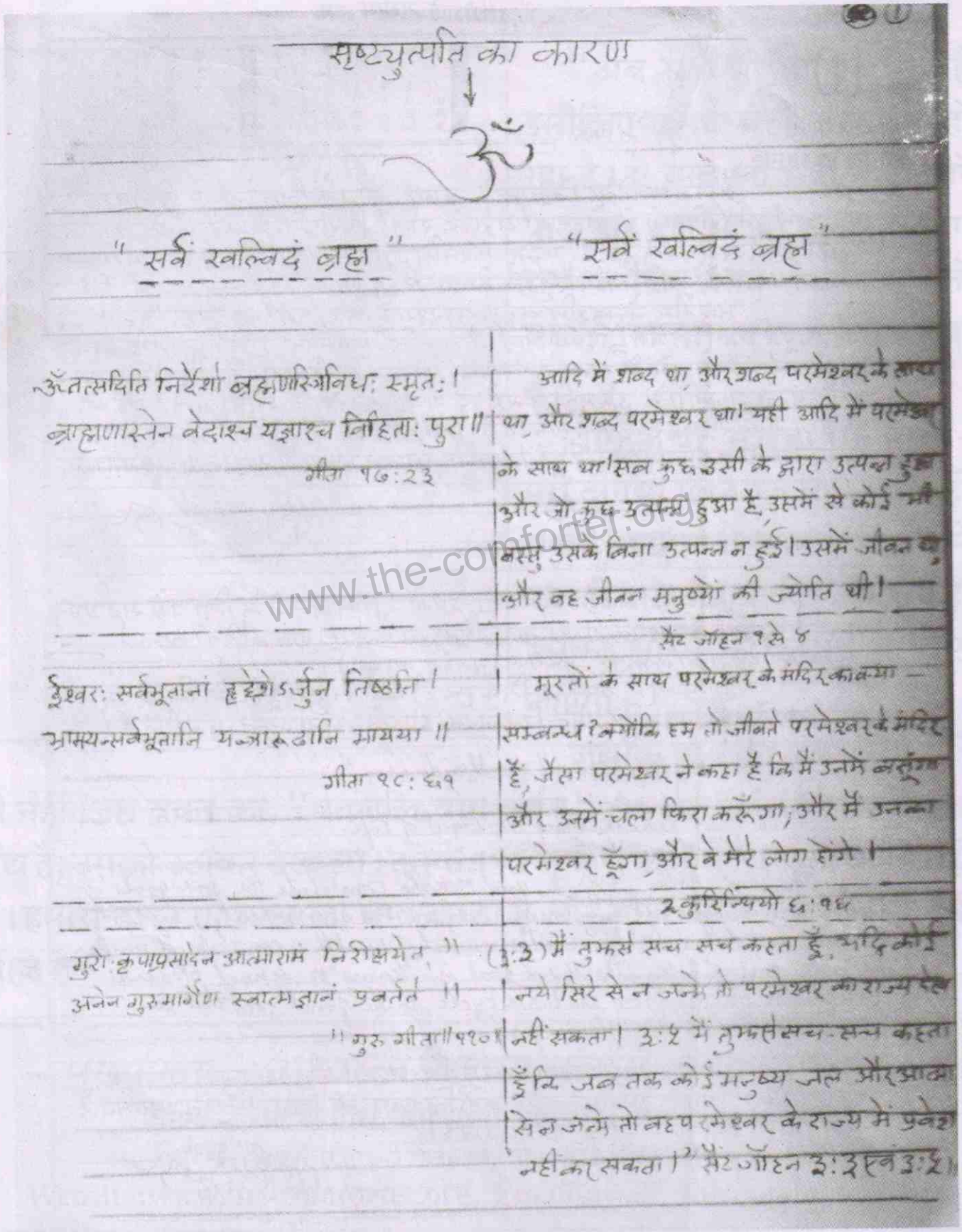

सृष्ट्युत्पत्ति का कारण

↓

ॐ

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म"

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म"

ॐतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा॥
गीता १७:२३

आदि में शब्द था और शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।
सेंट जॉहन १ से ४

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥
गीता १८:६१

मूरतों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिरा करूँगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा और वे मेरे लोग होंगे।
2 कुरिन्थियो ६:१६

गुरोः कृपाप्रसादेन आत्मारामं निरीक्षयेत्॥
अनेन गुरुमार्गेण स्वात्मज्ञानं प्रवर्तते॥
॥गुरु गीता॥९१॥

(३:३) मैं तुझसे सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। ३:५ मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। सेंट जॉहन ३:३ एवं ३:५

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि **यह सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

❖❖❖

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

www.the-comforter.org

रहस्यपूर्ण आध्यात्मिक भाषा

"आज्ञाचक्र से ऊपर के लोक पूर्ण रूप से सात्त्विक है तथा यहाँ शब्द का रूप बदल कर निरन्तर सूक्ष्म रूप धारण करता जाता है। अतः इनकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ पूर्ण रूप से मानवीय भाषा में व्यक्त नहीं की जा सकती। पूरे प्रयास के बावजूद सभी अन्त में यही कह देते हैं कि जो कुछ हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं, उसे हम भाषा द्वारा व्यक्त करने में अपने आपको असमर्थ महसूस कर रहे हैं। मुझे बहुत बार लोग पूछते हैं कि क्या इन रहस्य पूर्ण बातों को कभी मानवीय भाषा में बताना सम्भव होगा।

मैं उन्हें हमेशा एक ही उत्तर देता हूँ कि मैंने तुम्हें प्रारम्भ में ही बता दिया था कि **अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का विषय है।** इसमें मानवीय बुद्धि और ज्ञान कुछ भी सहयोग देने की स्थिति में नहीं है। **यही कारण है, मैंने आप लोगों को आज तक कोई उपदेश नहीं दिया, कोई कर्मकाण्ड या बहिर्मुखी आराधना की भी सलाह नहीं दी।** मैंने हमेशा यही बात कही कि इस जगत् में प्रेम सद्भाव, समर्पण, दया और सात्त्विक भाव से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है। संसार के भौतिक वैभव से यह प्राप्त होने वाला ज्ञान नहीं है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-सिद्धयोग पृष्ठ-137

तथा इसकी सहज स्वतंत्रता में कार्य करने लगती है; **क्योंकि वह केवल सनातन की ज्योतिर्मय शक्ति का ही अनुसरण करती हैं।** व्यक्ति के लिये तब और कोई चीज प्राप्त करने को नहीं रह जाती, न कोई कामना ही पूर्ण करने को शेष रहती है; वह तो सनातन के निर्वैयक्तिक स्वरूप या विराट् व्यक्तित्व का अंश बन जाता है। जीवन में भागवत आत्मा को अभिव्यक्त और लीलायित करना तथा दिव्य लक्ष्य की ओर यात्रा करते हुए संसार को धारण और परिचालन करना-इन उद्देश्यों को छोड़ कर और कोई उद्देश्य, तब उसे कार्य के लिये प्रेरित नहीं कर सकता। मानसिक धारणाएँ, सम्मतियाँ और कल्पनाएँ, तब और उसकी अपनी नहीं रहती; क्योंकि उसका मन निश्चल-नीरव हो जाता है, यह तब दिव्य ज्ञान के प्रकाश तथा सत्य की प्रणालिकामात्र होता है। आदर्श उसकी आत्मा की विशालता के लिये अत्यन्त संकीर्ण हो जाते हैं; उसके अन्दर तो **अनन्त का महासागर** सदा हिलोरें मारता और उसे गति देता रहता है।

केवल उनके अन्दर की वह शुद्ध क्रिया-शक्ति (**प्रवृत्ति**) ही जो ऊपर से प्रेरित या आरोपित समस्त कर्म तथा फल में एक समान आनन्द लेने के कारण अपना औचित्य सिद्ध करती है, अन्तिम पूर्णता के सुखद सामंजस्य में सुरक्षित रखी जायेगी। कर्म करना एवं उपभोग करना, स्नायवीय सत्ता का स्वाभाविक नियम तथा अधिकार है; किन्तु वैयक्तिक कामना के द्वारा अपने कर्म तथा भोग का चुनाव करना उसकी एक अज्ञानयुक्त इच्छामात्र है, उसका अधिकार नहीं। चुनाव तो परम तथा वैश्व इच्छाशक्ति को ही करना होगा; कर्म को उस परम इच्छाशक्ति की प्रबल गति में बदल जाना होगा; भोग का स्थान **शुद्ध आध्यात्मिक आनन्द की क्रीड़ा को लेना होगा।** समस्त वैयक्तिक इच्छा या तो ऊपर से प्राप्त अस्थायी प्रतिनिधित्व होती है या अज्ञानी असुर के द्वारा परकीय स्वत्व का अपहरण मात्र है।

अतएव, समर्पण ही कर्मयोग का साधन तथा साध्य है-अपनी समस्त चेष्टाओं का परम तथा विश्वव्यापी इच्छाशक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण, अशेष कर्मों का अपने अन्तःस्थित किसी ऐसी नित्य सत्ता के शासन के प्रति बिना किसी शर्त तथा नियम मर्यादा के समर्पण, जो हमारी अहं-प्रकृति की साधारण कर्म-प्रणाली का स्थान ग्रहण कर लेती है। परन्तु वह दिव्य परम इच्छाशक्ति क्या है तथा हमारे भ्रान्त कारणों एवं हमारी अन्ध तथा बन्दीकृत बुद्धि द्वारा वह कैसे पहचानी जा सकती है?

कभी कभी जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटती हैं कि हम पहले की सारी बातें भूल जाते हैं और हमारे मन में संशय पैदा हो जाता है, और वह संशय वहाँ तक पहुँच जाता है जिनको हमने अपना सब कुछ समर्पित कर रखा है। जो हमारे परम सद्गुरु या भगवान् है। और यह संदेह या विकृति केवल प्राण में सूक्षम रूप से रहने वाली अंहमूलक कामना होती है। रामायण काल में एक वर्णन आता है कि मां पार्वती ने भगवान् शिव से पूछा कि सीता के हरण पर श्रीराम ऐसे विलाप कर रहे है, इतना दुःख तो आमजन भी प्रकट नहीं करते हैं। फिर आप कह रहे हो कि वे विष्णु के अवतार हैं, मुझे इस बात में संदेह प्रकट हो रहा है।

इस पर भगवान् शिव ने कहा कि आपको इस बात की पुष्टि के लिए, उनकी परीक्षा लेनी चाहिए। माँ पार्वती ने माता सीता का वेश धारण किया और उस घने जंगल में पहुँच गई, जहाँ पर भगवान् श्रीराम विलाप कर रहे थे। अचानक सीता के वेश में माँ पार्वती को देखकर श्रीराम ने उनको विनम्र प्रणाम किया और भगवान् शिव के बारे में पूछा तो पार्वती अचंभित रह गई।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद के मन में भी श्रीरामकृष्ण देव के ज्यादा बीमार रहने पर अविश्वास पैदा हो गया कि गुरुदेव कहते है कि "जिस प्रकार 'भगवान्', श्रीराम व श्रीकृष्ण के रूप में धरती पर प्रकट हुए वैसे ही अब मैं रामकृष्ण के रूप में आया हूँ।" फिर इनकी ये दशा कैसे? क्या वे अपने आप को ठीक नहीं कर सकते ? ऐसी पीड़ा और दारूण दुःख क्यों भोग रहे है? स्वामी जी मन में ऐसा विचार कर ही रहे थे कि श्रीरामकृष्ण बोल पड़े कि "इसमें कोई संदेह नहीं, जो राम थे, जो कृष्ण थे, वही अब रामकृष्ण है।" मन के विचार को भांप कर ऐसा बोलते ही स्वामी जी का सारा संदेह दूर हो गया।

अवतारों की लीला बड़ी ही विचित्र होती है। पृथ्वी पर आम मानव की तरह साधारण जीवन जीते हैं तथा संपूर्ण मानव जाति के रूपान्तरण का भार अपने ऊपर लेते हैं।

हमारी परम इच्छाशक्ति या परम अभीप्सा संपूर्णतः सद्गुरुदेव के पावन श्री चरणों में ही होनी चाहिए। जो सद्गुरुदेव द्वारा प्रदत संजीवनी मंत्र का नियमित जाप और ध्यान करता है तो वह परम इच्छाशक्ति स्वतः ही जाग्रत होगी।

-संपादक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

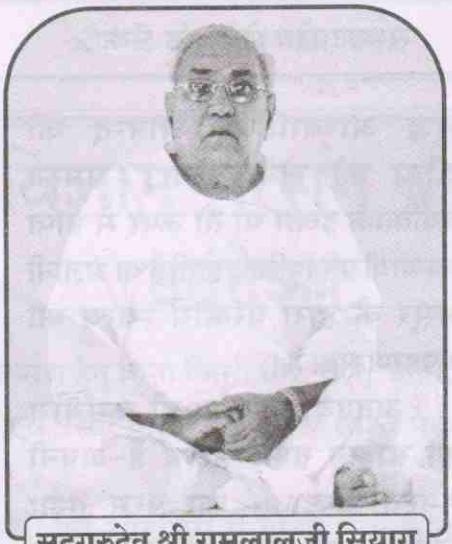

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणयाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

जोधपुर आश्रम-गुरु पूर्णिमा महोत्सव (27 जुलाई 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

जोधपुर आश्रम में स्काउट गाइड विद्यार्थियों और शिक्षकों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (5 व 18 जुलाई 2018)

www.the-comforter.org

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी